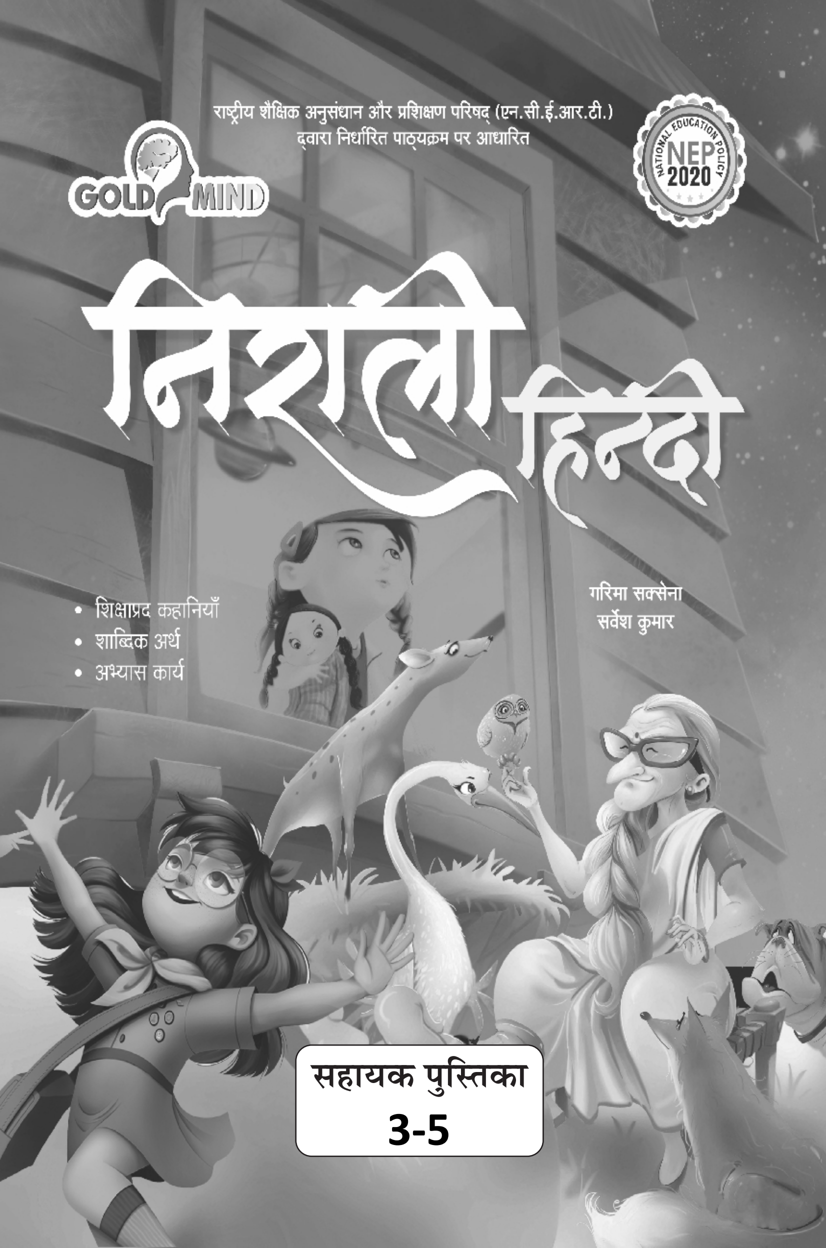

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.)
द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम पर आधारित

GOLD MIND

NATIONAL EDUCATION POLICY NEP 2020

निराली हिन्दी

- शिक्षाप्रद कहानियाँ
- शाब्दिक अर्थ
- अभ्यास कार्य

गरिमा सक्सेना
सर्वेश कुमार

सहायक पुस्तिका
3-5

प्रार्थना 1

(क) मौखिक

1. कण–कण को चाँदी–सा, चन्द्रमा चमकाता है।
2. प्यासी भूमि की प्यास को शीतल जलधारा बुझाती है।
3. ईश्वर जग का निर्माता है।

(ख) लिखित

1. रवि पत्ते को सोना–सा दमकाता है।
2. सरिताएँ झरनों का गुणगान करती हैं।
3. वन–उपवन के सुमन, सुरभि (सुगंध) सदा लुटाते हैं।
4. ईश्वर जग का निर्माता है इसलिए हमें ईश्वर के सामने सिर झुकाना चाहिए।

(ग)

1. नील–गगन में सावन के घन
उमड़–उमड़ जिसके छा जाते;
प्यासी भू की प्यास मिटाने;
शीतल जलधारा बरसाते।

2. जग के उस निर्माता को हम
सब मिलकर हैं शीश नवाते;
उस प्रभु को, उस ईश्वर को
हम सब मिलकर हैं शीश झुकाते।

भाषा-बोध

(क)	मोती	—	ज्योती	कण	—	क्षण
	सोना	—	खोना	डाल	—	माल
	वन	—	मन	सदा	—	मृदा
(ख)	जल	—	थल	गुण	—	अवगुण
	हँसना	—	रोना	यश	—	अपयश
(ग)	रवि	—	सूरज, प्रभाकर	गगन	—	आकाश, अम्बर
	वन	—	जंगल, गहन	सुमन	—	फूल, पुष्प

जादू की डिबिया 2

(क) मौखिक

1. प्रतीक की दादी ने उसको देवताओं और स्वर्ग की कहानी सुनाई।
2. प्रतीक ने महात्मा जी से पूछा, क्या स्वर्ग देखने में पैसे लगते हैं?
3. प्रतीक ने बाबा जी को डिबिया देते हुए कहा कि बाबा जी इस डिबिया के रुपये आप ले लीजिए। डिबिया भरना तो कोई मुश्किल नहीं है फिर भर जायेगी।
4. डिबिया में पैसे प्रतीक की दादी डालती थीं।

(ख) लिखित

1. प्रतीक को डिबिया बाबा जी ने दी ताकि वह एक अच्छा इन्सान बन जाये।
2. डिबिया पाने के बाद प्रतीक का मन किसी भी गलत काम में नहीं लगता था। वह सबकी मदद करने लगा था।
3. महात्मा जी ने स्वर्ग के विषय में बताया कि अच्छे लोग ही देवता होते हैं, जहाँ अच्छे लोग रहते हैं, वहीं स्वर्ग होता है। तुम भी देवता बन गए हो, तुम्हारा घर भी स्वर्ग है।
4. अच्छे काम का नतीजा अच्छा ही होता है।

(ग) 1. महात्मा जी ने प्रतीक से   2. प्रतीक ने महात्मा जी से

तीन मछलियाँ 3

(क) मौखिक

1. मछलियाँ सरोवर में रहती थीं।
2. पहली मछली समझदार थी।
3. मछुआरों ने उन तीन मछलियों को देखकर कहा कि काश हम जाल साथ लाए होते।
4. तीसरी मछली ने मूर्खता की कि उसने बुद्धि से काम नहीं लिया और पहली मछली की बात नहीं मानी।

(ख) लिखित

1. दूसरी मछली भी समझदार थी, लेकिन वह ज्यादा सोच विचार करना अच्छा नहीं समझती थीं।

2. पहली मछली ने सुझाव दिया कि हमें शीघ्र ही नहर के रास्ते दूसरे सरोवर में चले जाना चाहिए।

3. दूसरी मछली ने अपना जीवन बचाने के लिए, उसने अपना शरीर ऐसा कर लिया, जैसे वह मर गई हो।

भाषा-बोध

(क) सरोवर ⟶ स् + अ + र् + ओ + व् + अ + र् + अ

मछुआरा ⟶ म् + अ + छ् + उ + अ + आ + र् + आ

समझदार ⟶ स् + अ + म् + अ + झ् + अ + द् + आ + र् + अ

(ख) मोटी मछली ऊँचा पहाड़ बड़ा पेड़

अच्छी मछली बर्फीले पहाड़ हरा पेड़

(ग) मछली — मीन, मत्स्य पानी — जल, वारि

सरोवर — ताल, तालाब घर — गृह, आलय

(घ) आनंद गंभीर मंगल

परंतु जंगल संगत

(ङ) द्वारपाल, द्वार मस्त, व्यस्त

आवश्यक, अनावश्यक सन्त, दन्त

चिंटू चूहा और नट्टू खरगोश 4

आओ अभ्यास करके देखें

1. (i) उसे अपनी चीज दे देते हैं। यह सोचकर कि कल हमें भी उसकी किसी वस्तु की आवश्यकता पड़ सकती है।

2. (ii) अपने भाई-बहन पर प्यार दिखाते हैं क्योंकि अपने भाई-बहन के साथ प्यार से रहना चाहिए।

3. (iii) आप खुश होते हैं क्योंकि माता पिता का कहना मानना चाहिए और उनका हाथ बँटाना चाहिए।

दीपक की करामात 5

(क) मौखिक

1. अलादीन एक गरीब बुढ़िया का बेटा था।
2. अजनबी आदमी अलादीन को जंगल में लेकर गया।

3. अजनबी आदमी ने अलादीन के दीपक न देने पर गुस्से में गुफा के मुख पर पत्थर रखा था वह चाहता था कि अलादीन वहाँ से बाहर नहीं निकले और सदैव वहीं बंद रहे।
4. अलादीन जब दीपक साफ कर रहा था, तब उसे दीपक के रहस्य का पता चला।

(ख) लिखित

1. अजनबी आदमी ने अलादीन की माँ से कहा कि—''आप मुझे नहीं जानती, मैं अलादीन का चाचा हूँ। आप अलादीन को मेरे साथ भेज दीजिए। मैं उसे कोई अच्छा सा काम सिखा दूँगा। वह काम करने लग जाएगा तो आपकी गरीबी दूर हो जाएगी।''
2. अजनबी आदमी अलादीन को जंगल में लेकर गया था ताकि वह उसके द्वारा दीपक प्राप्त कर सके।
3. अलादीन एक बड़ा-सा पत्थर और लकड़ी उठा लाया। उसने सबसे ऊपर वाली सीढ़ी पर पत्थर रखा और उस पर चढ़कर गुफा के मुख तक पहुँच गया। वहाँ पहुँचकर उसने लकड़ी से गुफा के मुख पर रखे पत्थर को जोर से ठेला। पत्थर लुढ़क कर दूर जा गिरा। अलादीन बाहर आ गया।
4. जिन्न ने अलादीन के लिए महल बना दिया और खूब सारा धन दिया, जिससे उसने व्यापार शुरू किया और धीरे-धीरे वह नगर का सबसे अमीर आदमी बन गया।

(ग) 1. दीपक 2. अजगर लटके 3. जिन्न

भाषा-बोध

(क) गरीब — दरिद्र, निर्धन बेटा — सुत, पुत्र
जंगल — वन, कानन

(ख) बुढ़िया गुफा सूरज मुख झूला फूल

(ग) 1. मैं 2. तुम 3. वह 4. आप 5. उसने

पेड़ों की सुरक्षा 6

(क) मौखिक

1. पीपल मनुष्य के बारे में कहता है कि मनुष्य स्वार्थ में अंधा हो गया है।
2. बंदर शिकायत करता है कि मनुष्य द्वारा पेड़ काटे जा रहे हैं, यदि पेड़ नहीं रहेंगे तो हम कहाँ रहेंगे और क्या खाएंगे?

3. रागिनी कहती है कि जंगल-तो-जंगल, घर-आँगन में भी पेड़-पौधे लगाकर, अपने आसपास के वातावरण को हरा-भरा रखेंगे।
4. बच्चे प्रण करते हैं कि वृक्षों का संरक्षण करेंगे और नये पेड़-पौधे भी लगाएँगे।

(ख) **लिखित**

1. बरगद मनुष्य के वृक्षों को काटने की भूल पर खेद प्रगट करता है।
2. कोयल बरगद से शिकायत करती है कि हम भी बहुत दुखी हैं। साँस लेना मुश्किल होता जा रहा है। अब मैं कैसे गा पाऊँगी?
3. रागिनी को हरे-भरे पेड़-पौधे, बाग-बगीचे बहुत अच्छे लगते हैं।
4. बच्चे एक स्वर में गीत गाते हैं—
   आओ सब मिलकर पेड़ लगाएँ,
   धरती पर हरियाली लाएँ।
   वातावरण स्वच्छ और शुद्ध बनाकर,
   जीवन-भर की खुशहाली पाएँ।

(ग)
1. आम ने बरगद से
2. पीपल ने बरगद से
3. कोयल ने बरगद से
4. मयंक ने रागिनी से
5. मयंक ने रागिनी और अक्षय से

(घ) 1. सही 2. गलत 3. सही 4. गलत 5. सही

भाषा-बोध

(क)
वृक्ष — पेड़, तरु
जंगल — वन, कानन
बंदर — वानर, लंगूर
बालक — सुत, शिशु
बगीचा — उपवन, बाग

(ख)

खुश	दु:खी
जीवन	मरण
हित	अहित
रक्षक	भक्षक
धैर्य	अधैर्य
शांति	अशांति

(ग)
रंगीन वेशभूषा
शैतान बंदर
स्वार्थी मनुष्य
पीला आम
हरा पीपल
शैतान बालक

(घ) चिरायु — इ + च् + र् + आ + य् + उ

मनुष्य — म् + अ + न् + उ + ष् + य् + अ
आश्चर्य — आ + श् + अ + च् + अ + र् + य् + अ
गुणकारी — ग् + उ + ण् + अ + क् + आ + र् + ई

साफ़-सफ़ाई रखो 7

(क) मौखिक

1. आज चारों ओर गंदगी का वातावरण है।
2. कवि मनुष्य के अंदर धोखाधड़ी, जलन से पूर्ण और मन की बीमारी को दूर करने की बात करता है।
3. नीरोग बने रहने के लिए सफाई आवश्यक है।
4. कवि स्वच्छ राष्ट्र के सुंदर गान को गाने के लिए प्रेरित करता है।

(ख) लिखित

1. मनुष्य का मन धोखाधड़ी और जलने के कारण गंदा है।
2. देश का कल्याण करने के लिए गन्दगी को दूर किया जाना आवश्यक है।
3. अपने मन में यही बात धारण कर लो कि तुम्हें गन्दगी नहीं पालनी है और स्वच्छता का दीप जलाकर जीवन में नव-ज्योति जलानी है।
4. कवि अन्दर और बाहर दोनों की शुद्धता पर बल देता है। क्योंकि इससे हम अन्दर और बाहर दोनों जगह से स्वस्थ रहेंगे।

(ग)

1. इसी तरह मन भी गंदा है,
धोखाधड़ी, जलन से पूर्ण।
यह जो अन्दर की बीमारी है,
इसको भी करना है दूर।
2. दूर गंदगी के होने से,
खुशियों का संसार बसेगा।
बस्ती अपनी सुंदर होगी,
वायु, देह, मन शुद्ध रहेगा।

भाषा-बोध

(क)

गंदगी	—	अस्वच्छता	उपचार	—	इलाज
अंदर	—	भीतर	कल्याण	—	परोपकार
मन	—	चित्त	नीरोग	—	स्वस्थ

(ख) • सबल — निर्बल

सबल की नहीं **निर्बल** की मदद करो।

• नव — पुरातन

नव संस्कृति **पुरातन** संस्कृति से भिन्न है।

• सुंदर — कुरुप

सुंदर और **कुरुप** दोनों तरह के इन्सान होते हैं।

• शुद्ध — अशुद्ध

पौधे **अशुद्ध** वायुमण्डल को **शुद्ध** करते हैं।

(ग)

स्वच्छ —	स्वच्छता	सबल —	सबलता
स्वस्थ —	स्वस्थता	नम्र —	नम्रता
सुंदर —	सुंदरता	शुद्ध —	शुद्धता

(घ)

बालक —	शैतान बालक,	नटखट बालक
जीवन —	खुशहाल जीवन,	सुखी जीवन
वायु —	शीतल वायु,	शुद्ध वायु
देह —	स्वस्थ देह,	नीरोगी देह

(ङ)

ल्य —	तुल्य, मूल्य	त्य —	सत्य, असत्य
द्ध —	युद्ध, क्रुद्ध		

(च)

पुत्र —	कुपुत्र	फल —	विफल
योग —	वियोग	ज्ञान —	विज्ञान
कर्म —	कुकर्म	चाल —	कुचाल

स्वतंत्रता की ओर 8

(क) **मौखिक**

1. धनी मन-ही-मन बड़बड़ाता है कि ''वे सब समझते हैं कि मैं नौ साल का हूँ इसलिए मैं बुद्धू हूँ। पर मैं बुद्धू नहीं हूँ।
2. गाँधीजी की योजना थी कि वे दांडी तक पैदल चलकर जाएँगे और समुद्र के पानी से नमक बनायेंगे।
3. धनी को गाँधीजी की योजना के बारे में बिन्दा ने बताया।
4. धनी गाँधीजी से मिलकर अपने दांडी-यात्रा पर जाने के लिए पूछना चाहता था।

(ख) **लिखित**

1. धनी को बिन्नी की देखभाल का काम सौंपा गया था। बिन्नी आश्रम की एक बकरी थी।
2. धनी बिन्नी से बात करता है कि ''कोई बात जरूर है बिन्नी! वे सब गाँधीजी के कमरे में बैठकर बातें करते हैं। कोई योजना बनाई जा रही है। मैं सब समझता हूँ''। धनी बिन्नी से बात इसलिए करता है क्योंकि वह उसकी दोस्त है।
3. धनी अपने पिता से खुद को दांडी-यात्रा पर ले जाने के लिए निवेदन करता है।
4. गाँधीजी धनी को प्यार से समझाते हैं कि मैं दांडी यात्रा पर जाकर कमजोर हो जाऊँगा, अगर तुम साथ चलोगे तो बिन्नी की देखभाल कौन करेगा और जब मैं वापस आऊँगा तो मुझे खूब सारा दूध पीना पड़ेगा ताकि मेरी ताकत वापस आ जाए इसलिए तुम यहीं रहकर बिन्नी की देखभाल करो।

(ग) 1. बिन्नी 2. भजन 3. नमक
4. भारतीयों 5. नौजवान

(घ) 2. धनी ने, अम्मा के रोटी पकाते वक्त पूछा।
3. बूढ़े बिन्दा ने आलू खोदते हुए धनी से कहा।
4. बरामदे में चरखे के पास बैठकर गाँधीजी ने धनी से कहा।
5. धनी के पिता जी ने चरखा कातते हुए धनी से कहा।

भाषा-बोध

(क) बुद्धू — धनी सोचता था, उसे सब **बुद्धू** समझते हैं।
विरोध — महात्मा गाँधी ब्रिटिश सरकार के अन्याय के **विरोध** में जुलूस निकालते थे।
सत्याग्रह — ब्रिटिश सरकार के खिलाफ गाँधी जी के द्वारा **सत्याग्रह** का जुलूस निकाला जाता था।
स्वतन्त्रता — गाँधी जी एक **स्वतन्त्रता** सेनानी थे।

(ख) माता — माँ, जननी स्वतन्त्रता — आजादी, मुक्ति
समुद्र — सागर, जलधि बालक — शिशु सुत

(ग) स्वतन्त्रता — परतन्त्रता पसंद — नापसंद

दिन	—	रात	सवाल	—	उत्तर
न्याय	—	अन्याय	शान्ति	—	अशान्ति
पास	—	दूर	विरोध	—	सहमति

पंचों का न्याय और अकबर 9

(क) मौखिक

1. गड़रियों की पंचायत के कारण उनके आराम में रुकावट आ रही थी।
2. अकबर ने मन–ही–मन पंचायत की परीक्षा लेने का निश्चय किया।
3. पंचों ने बीरबल को, पीपल के पेड़ को बुलाकर लाने का आदेश दिया।

(ख) लिखित

1. बीरबल ने पंचायत की महत्ता बताते हुए कहा कि पंच परमेश्वर होते हैं। पंचों के न्याय में किसी सबूत के बिना सच सामने आ जाता है।
2. अकबर तथा बीरबल के बीच मुकदमे का कारण पाँच सौ मोहरें थी जो अकबर ने उधार ली थीं लेकिन अब वह मना कर रहे थे कि मैंने नहीं लीं।
3. पंचों ने अकबर के, ये कहने पर कि पेड़ तो यहाँ से बीस मील दूर है, उनके इस झूठ को पकड़ लिया कि यदि वे वहाँ नहीं थे तो उन्हें कैसे पता कि पेड़ कितनी दूर है?

भाषा-बोध

(क)

बादशाह	—	नौकर	न्याय	—	अन्याय
उधार	—	नगद	ठीक	—	खराब
मान	—	अपमान	प्रसन्न	—	दुखी

(ख)

बीरबल	—	ब् + ई + र् + अ + ब् + अ + ल् + अ
मुकद्मा	—	म् + उ + क् + अ + द् + अ + म् + आ
बादशाह	—	ब् + आ + द् + अ + श् + आ + ह् + अ
पंचायत	—	प् + अं + च् + आ + य् + अ + त् + अ
न्याय	—	न् + अ + य् + आ + य् + अ
मूलधन	—	म् + ऊ + ल् + अ + ध् + अ + न् + अ

(ग)

गड़रिया	—	गड़रिये	मोहर	—	मोहरें
राजधानी	—	राजधानियाँ	बात	—	बातें

शर्त — शर्तें पंचायत — पंचायतें

(घ) मनायी जाती है।

असफल रही।

विरोध करती थी।

जलकर राख हो गयी।

सत्य की जीत **10**

(क) मौखिक

1. चन्द्रगुप्त धार्मिक और न्याय प्रिय सम्राट थे।
2. सुरक्षा प्रबंध की जिम्मेदारी यशपाल को सौंपी गयी।
3. सम्राट ने करमसिंह को अपना खजाना मन्त्री नियुक्त किया क्योंकि वे उसकी ईमानदारी से बहुत खुश थे।
4. प्रधानमन्त्री करमसिंह से ईर्ष्या इसलिए करता था क्योंकि वह सम्राट का प्रिय मंत्री बना था।

(ख) लिखित

1. चन्द्रगुप्त पुष्कर की, तीर्थयात्रा पर गये थे।
2. रानी ने चन्द्रगुप्त से यशपाल को प्रधानमन्त्री पद से न हटाने के लिए प्रार्थना की।
3. सम्राट तथा सेनापति, चोरी के रहस्य का पता लगाने के लिए वेष बदलकर महल से बाहर निकले।
4. करमसिंह को कारागार से अगले दिन दरबार लगने पर मुक्त किया गया क्योंकि राजा को सच्चाई का पता चल गया था।

(ग)

1. रानी ने राजा से
2. यशपाल ने महाराज से
3. प्रधानमन्त्री यशपाल ने अपने सैनिक अधिकारी से

भाषा-बोध

(क)

- सुख–दुख

  सुख और **दुख** जीवन के दो अंग हैं।
- दंड—क्षमा

  हर एक **दंड** को **क्षमा** नहीं किया जा सकता।

- राजा—रंक
  हरिश्चंद्र **राजा** से **रंक** बन गया।
- प्रिय—अप्रिय
  कोई बालक बहुत **प्रिय** और कोई **अप्रिय** होता है।
- दोषी—निर्दोष
  यशपाल **दोषी** और करमसिंह **निर्दोष** था।

(ख)

सम्राट	—	राजा, शासक	मिट्टी	—	मृदा, जमीन
व्यक्ति	—	जन, मनुष्य	दिन	—	दिवस, वार

(ग)

चित्त	—	निमित्त, प्रशन्नचित्त
बिल्ली	—	सिल्ली, तिल्ली
रस्सी	—	लस्सी, अस्सी

शेख जी की हाज़िरजवाबी 11

(क) मौखिक

1. शेख जी अपनी हाजिरजवाबी के लिए प्रसिद्ध थे।
2. सुल्तान ने शेख जी को महामूर्ख इसलिए कहा कि उन्होंने शेख जी से घोड़ों को पानी दिखाने के लिए कहा था और वह पानी दूर से दिखाकर वापस ले आये थे।
3. शेख जी ने एक नौकर को वैध को बुलाने और एक को कफन लाने का आदेश दिया था।

(ख) लिखित

1. सुल्तान और शेख जी जंगल में शिकार खेलने गये थे।
2. शेख जी घोड़ों को झील से बिना पानी पिलाए इसलिए लौटा लाये क्योंकि सुल्तान ने पानी पिलाने का नहीं दिखाने का आदेश दिया था।
3. सुल्तान ने अक्लमंद आदमी के बारे में कहा कि अक्लमंद आदमी तो एक काम बताने पर दो काम करते हैं।
4. सुल्तान ने शेख जी से हार तब मानी जब उन्होंने वैध के साथ-साथ कफन भी मँगा लिया।

(ग)

1. सुल्तान ने शेख जी से
2. शेख जी ने सुल्तान
3. नौकर ने सुल्तान से
4. शेख जी ने सुल्तान से

5. शेख जी ने सुल्तान से

भाषा-बोध

(क)

1. घोड़ों को पानी पिला लाओ।
2. अब से मैं एक काम बताने पर दो काम करूँगा।
3. आप वैद्य जी को बुलवा दो।
4. दूसरा नौकर कफन लेकर आ गया।
5. सुल्तान खीझकर चुप हो गए।

(ख)

दिन	—	वार, दिवस	झील	—	सरोवर, तड़ाग
घोड़ा	—	तुरंग, अश्व	पानी	—	जल, नीर
निराला	—	अनोखा, अनुपम			

(ग)

विख्यात	—	कुख्यात	प्रश्न	—	उत्तर
धूप	—	छाँव	मूर्ख	—	बुद्धिमान
आदमी	—	औरत	दिन	—	रात
बीमार	—	स्वस्थ	स्वर्ग	—	नरक

(घ)

सेनापति ✓	सेनापती
हुकम	हुक्म ✓
मुर्खता	मूर्खता ✓
बुद्धिमान ✓	बुद्‌धमान

(ङ) (1) शिकारी (2) हलवाई (3) किसान (4) सुनार (5) कुम्हार

(च)

युद्ध	—	कौशल	फूलों	—	फलो
नव	—	ज्योति	जगह	—	जगह
प्राणि	—	जगत	घर	—	आँगन
त्राहि	—	त्राहि	जीवन	—	भर

चिन्टू की नादानी 12

(क) मौखिक

1. चिंटू बड़ा नटखट बालक था।
2. चिंटू का मन हुआ कि वह भी दोपहर में सो जाए लेकिन कैसे? वह इसी उधेड़बुन में था।

3. चिंटू ने शक्तिमान की नकल की।

(ख) **लिखित**

1. गर्मी की छुट्टियों में चिंटू नानी के यहाँ गया हुआ था।
2. चिंटू शक्तिमान की नकल करते हुए गिर गया और उसे चोट लग गई।
3. टी०वी० पर आये कार्टून की नकल करना गलत है। नानी ने चिंटू को यह समझाया क्योंकि शक्तिमान की नकल करते हुए उसे चोट लग गई थी।

(ग) शक्तिमान — चिंटू **शक्तिमान** की नकल कर रहा था।

इशारा — चिंटू ने दूसरे बच्चों को **इशारे** से बाहर बुलाया।

मनोरंजन — टी०वी० पर प्रोग्राम बच्चों के **मनोरंजन** के लिए होते हैं।

आँचल — चिंटू नानी के **आँचल** में मुँह छुपाकर रोने लगा।

(घ) 1. चिंटू ने अपनी माँ से 2. एक बच्चे ने चिंटू से

3. नानी से चिंटू से 4. नानी ने चिंटू से

भाषा-बोध

(क)

वर्ष	—	हर्ष	उत्कर्ष	सिर्फ
क्रम	—	प्रेम	प्रण	प्रतीक
ड्राइंग	—	ट्रॉली	ट्रॉफी	ट्रेन

(ख)

छुट्टी	—	छुट्टियाँ	नानी	—	नानियाँ
परी	—	परियाँ	कमरा	—	कमरे
बच्चा	—	बच्चे	गेंद	—	गेंदें
गमला	—	गमले	गलती	—	गलतियाँ

(ग)

अपनी—परायी	उसने **अपनी-परायी** चीजें एक साथ रख दीं।
बाहर—अन्दर	**अन्दर-बाहर** मत करो।
खुश—दुखी	**खुश** रहो **दुखी** नहीं।
गरमी—सर्दी	**गरमी** से **सर्दी** का मौसम अच्छा है।
नकल—असल	**नकली** नहीं **असली** चीज लो।
गलत—सही	वो **गलत** मगर मैं **सही** था।

(घ)

चिंटु	चिंटू ✓
अँगुली ✓	अंगुली
बिस्तर ✓	विश्तर
लाडला ✓	लाड़ला

शाबास — शाबाश ✓

(ङ) 1. नानी ने कहानी सुनाई।
2. दूसरों की नकल मत करो।
3. बाहर मत खेलो।
4. चिंटू को चोट कैसे लगी?
5. यहाँ क्या कर रहे हो?

गड़ा धन 13

(क) **मौखिक**

1. किसान अपने लड़कों को समझाता है कि सब मिलकर साथ में रहना।
2. बाप के मर जाने पर लड़के धन के लालच में सारे खेत को खोद डालते हैं।
3. जब खेत खोदने के बाद उन्हें, धन नहीं मिलता तो वे उसमें सरसों बो देते हैं और उस फसल से वे मालामाल हो जाते हैं।

(ख) **लिखित**

1. किसान ने अपने बेटों को भेद बताया कि वह सारा धन खेतों में रखकर जा रहा है।
2. किसान के बेटे धन को प्राप्त करने के उद्देश्य से खेत को खोदते हैं।
3. किसान के बेटे निराश होकर खेत में सरसों बो देते हैं।
4. किसान अपने बेटों को शिक्षा देना चाहता था कि मेहनत से ही धन प्राप्त होता है।

(ग) 1. एक भेद मैं बतलाता हूँ
सारा धन रखे जाता हूँ
अपने उन खेतों में, जिनको
अब तक जोता—बोया।''

2. याद उन्हें आई बूढ़े की तब वह अन्तिम बात,
खेतों में रखे जाता हूँ मैं अपनी सौगात।
खेत खोदते नहीं अगर उस लालच में मेहनत कर,
तो फिर क्या पैदा होता और उन्हें मिल पाता कैसे धन?

(घ) भेद — रहस्य
किसान ने अपने बेटों को एक **भेद** बताया।
रईस — मालामाल
एक फसल में ही किसान के बेटे **रईस** हो गए।

निराश — हताश

किसान के बेटे धन न मिलने पर **निराश** हो गए।

सौगात — उपहार

किसान ने कहा कि मैं अपनी **सौगात** खेतों में छोड़कर जा रहा हूँ।

भाषा-बोध

(क)

अपने	—	पराये	पाया	—	खोया
दु:खी	—	सुखी	अच्छी	—	खराब
रोना	—	हँसना	धनी	—	निर्धन

(ख)

खदा	—	खोदा	मज	—	मौज
कना	—	कोना	फज	—	फौज
सगात	—	सौगात	बना	—	बोना
मल	—	मोल	कयल	—	कोयल
कन	—	कौन	चक	—	चौंक

(ग) रस्सी, अस्सी, लस्सी

प्रसन्न, सम्पन्न, अन्न

उत्तर, सत्तर, पिचहत्तर

झाँसी की रानी 14

(क) मौखिक

1. लक्ष्मीबाई का बचपन का नाम मनुबाई था।
2. मनु के हाथी की सवारी करने की बात सुनकर उनके पिता को आश्चर्य हुआ।
3. ज्योतिषी ने मनु की कुण्डली देखकर बताया कि मनु बेटी निश्चय ही महारानी बनेगी।
4. दूलाजी एक विश्वासघाती था। उसने अंग्रेजों को रानी के तोपखाने और बारुदखाने का पता बताकर रानी को धोखा दिया।

(ख) लिखित

1. लक्ष्मीबाई का जन्म 19 नवम्बर सन् 1835 को बनारस में हुआ था।
2. मनु के बारे में ज्योतिषी की बात सन् 1848 के बाद सच साबित हुई, जब झाँसी के राजा गंगाधर राव ने मनु की निडरता और बहादुरी देखकर, उससे विवाह कर लिया।

3. अंग्रेजों ने दामोदर राव और रानी को राज्य का उत्तराधिकारी नहीं माना और राज्य पर कब्जा कर लिया इसलिए लक्ष्मी बाई को अंग्रेजों से युद्ध करना पड़ा।
4. रानी लक्ष्मीबाई लड़ते-लड़ते अंग्रेजों की सेना से घिर गईं और घायल हो गयी। और हँसते-हँसते उस वीरांगना ने अपने प्राण त्याग दिए। इस प्रकार उन्हें वीरगति प्राप्त हुई।

(ग) मनुबाई ने अपने पिता मोरोपंत से
पिता ने मनु से
ज्योतिषी ने मोरोपंत से

(घ)

1.	उनका बचपन का नाम मनुबाई था।	(3)
2.	पुत्री तुम्हारे भाग्य में हाथी की सवारी नहीं है।	(2)
3.	शाबास बिटिया! बहुत बढ़िया घुड़सवारी की।	(1)
4.	हँसते-हँसते वीरांगना ने अपने प्राण त्याग दिये।	(5)
5.	पड़ोसी राज्यों ने रानी का साथ नहीं दिया।	(4)

भाषा-बोध

(क)

बालिका	बच्ची
हाथी	गज
घोड़ा	अश्व
संग्राम	लड़ाई
विश्वास	भरोसा
मृत्यु	मौत

(ख)
- स्वतन्त्रता—परतन्त्रता
  परतन्त्रता का जीवन बड़ा कठोर होता है।
- जन्म—मृत्यु
  मृत्यु जीवन का एक सत्य है।
- शौक—सादगी
  वह **सादगी** से जीवन व्यतीत करता था।
- स्वर्ग—नरक
  पापी व्यक्ति **नरक** में जाते हैं, ऐसा कहा जाता है।
- धैर्य—अधीर
  फेल हो जाने पर वह **अधीर** हो गया।

- वीरता—कायरता
  रानी लक्ष्मीबाई ने वीरता से काम लिया **कायरता** से नहीं।

(ग)

बहादुरी	—	**बहादुर**	वीरता	—	**वीर**
निडरता	—	**निडर**	मृत्यु	—	**मरना**
सुन्दरता	—	**सुन्दर**	गरीबी	—	**गरीब**

(घ)

2. मेरे पास हाथी खरीदने के लिए धन नहीं है। — **मोरोपंत**
3. उनके बचने की आशा भी न रही। — **गंगाधर राव**
4. चाहें मुझे प्राण ही क्यों न देने पड़े? — **रानी लक्ष्मीबाई**

(ङ)

शाबाश	—	**शाबाश**	मनूबाई	—	**मनुबाई**
बहादूरी	—	**बहादुरी**	विरांगना	—	**वीरांगना**
भागीरथि	—	**भागीरथी**	जन्मकुँडली	—	**जन्मकुंडली**
आन्नद	—	**आनंद**	रियाशत	—	**रियासत**

(च)

बालक	—	**बालिका**	पिता	—	**माता**
लड़का	—	**लड़की**	बेटा	—	**बेटी**
राजा	—	**रानी**	छात्र	—	**छात्रा**
हाथी	—	**हथिनी**	घोड़ा	—	**घोड़ी**

हवा और सूरज 15

(क) मौखिक

1. लोग सूरज की पूजा करते तो हवा को बहुत बुरा लगता था।
2. सूरज और हवा दोनों अपने आपको बड़ा समझते हैं और दोनों में इसी बात को लेकर बहस होती है।
3. हवा अपनी शक्ति का बखान करते हुए कहती है कि मैं रिमझिम-रिमझिम वर्षा करती हूँ यदि मैं वर्षा न करूँ तो दुनिया के सारे पेड़-पौधे सूख जाएँगे।
4. सूरज ने हवा के सामने प्रस्ताव रखा कि ''हम दोनों में से जो भी इस व्यक्ति का कम्बल उतरवा देगा। वही शक्तिशाली और बड़ा माना जाएगा।''

(ख) लिखित

1. सूरज अपनी शक्ति का वर्णन करते हुए कहता है कि ''संपूर्ण पृथ्वी मेरे प्रकाश से प्रकाशित है। मैं सारी पृथ्वी की ऊष्मा का एकमात्र स्रोत हूँ।''

2. हवा अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हुए, बहुत तेज हवा चलाती है। मूसलाधार बारिस करती है और ओले भी बरसाती है।
3. जब सूरज तेजी से चमकने लगा तो उसे कम्बल ओढ़ने में परेशानी होने लगी और उसने अपना कम्बल उतार दिया।
4. सूरज वातावरण की सच्चाई का वर्णन करते हुए कहता है कि वातावरण में न कोई बड़ा और न कोई शक्तिशाली, बल्कि हम लोग समान हैं और समय और परिस्थिति के अनुसार सबका अलग-अलग महत्व है।''

(ग) 1. भेंट 2. पृथ्वी, प्रकाश 3. शर्त
4. कम्बल 5. भीषण

(घ) 1. समीर — लोग शीतल मन्द **समीर** की प्रशंसा करते हैं।
2. अहंकार — हवा ने सूरज से कहा व्यर्थ का **अहंकार** है।
3. पराजय — हवा को अपनी **पराजय** साफ दिख रही थी।
4. शक्तिशाली — हवा ने सूरज से कहा तुम ही अधिक **शक्तिशाली** हो।

भाषा-बोध

(क)

ईर्ष्या	—	प्रेम	मंद	—	तीव्र
प्रशंसा	—	बुराई	प्रकाश	—	अन्धकार
ठंड	—	गर्मी	पराजय	—	विजय
कम	—	ज्यादा	सच्ची	—	झूठी

(ख)

सूरज	—	सूर्य, रवि	हवा	—	पवन, समीर
वर्षा	—	बारिस, वृष्टि	पेड़	—	वृक्ष, विटप
बादल	—	घन, वारिद			

(ग)

×	ा	ि	ी	प
कल	काल	किला	कील	कुल
पल	माल	जिला	मील	गुल
जल	जाल	मिला	गीत	पुल
नल	दाल	गिला	रीत	पुरातन

ू	े	ै	ो	ौ
कूल	केला	कैलाश	कोयल	कौआ
रूल	मेला	मैदान	मोर	गौ

सूल	ठेला	गैर	ओखली	गौरैया
जून	बेला	बैरना	बोलना	बौराना

(घ)

अहंकार	—	अ + ह् + अं + क् + आ + र् + अ
तूफान	—	त् + ऊ + फ् + आ + न् + अ
पराजय	—	प् + अ + र् + आ + ज् + अ + य् + अ
शक्तिशाली	—	श् + अ + क् + त् + इ + श् + आ + ल् + ई
गरमी	—	ग् + अ + र् + अ + म् + ई

(ङ)

गरम	—	दिन	गोल	—	सूरज
ठण्डी	—	हवा	भारतीय	—	वृक्ष
सूखी	—	पत्तियाँ	ठण्डा	—	जल
उपयोगी	—	पौधे	ईमानदार	—	आदमी
लम्बी	—	रस्सी	स्वार्थी	—	दुनिया
बलुई	—	रेत	विशाल	—	हाथी
मीठा	—	दूध	उड़ानहीन	—	पक्षी

शिष्टाचार 16

(क) मौखिक

1. शिष्टाचार से तात्पर्य अच्छे व्यवहार से है।
2. बड़ों को केवल 'हाँ' या 'ना' बोलना अशिष्टता की पहचान है।
3. अनुशासन, शिष्टाचार की तीसरी शर्त है।
4. बातचीत करते समय आवाज ऐसी होनी चाहिए कि दूसरे को आराम से सुनाई दे सके। और दूसरों को दिक्कत न हो।

(ख) लिखित

1. विनम्रता, शिष्टाचार की पहली शर्त है।
2. किसी का नाम लेते या लिखते समय उसके पहले 'श्रीमान', 'श्रीमती' या 'कुमारी' लगाना चाहिए।
3. अनुशासन के अन्तर्गत निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए—
   (i) हमें समाज के नियमों और कानूनों का पालन करना चाहिए।
   (ii) समय का पाबन्द होना चाहिए।

(iii) महिलाओं के प्रति सम्मान प्रकट करना चाहिए।

(iv) किसी की खिल्ली नहीं उड़ानी चाहिए।

(ग) विनम्रता — **विनम्रता** शिष्ट लोगों का लक्षण होता है।

अशिष्टता — किसी की निन्दा करना **अशिष्टता** है।

जिद्द — हमें हर एक चीज के लिए **जिद्द** नहीं करनी चाहिए। यह भी अशिष्टता है।

अनुचित — व्यक्ति को किसी के साथ **अनुचित** व्यवहार नहीं करना चाहिए।

अनुशासन — **अनुशासन** शिष्टाचार की तीसरी शर्त है।

(घ) खाली स्थान भरो–

1. विनम्रता 2. आभार 3. आय

4. निंदा 5. शिष्टाचार और सहनशीलता

भाषा-बोध

(क)

शिष्ट	—	**अशिष्ट**	आदर	—	**निरादर**
सम्मान	—	**अपमान**	जीवन	—	**मरण**
उचित	—	**अनुचित**	निंदा	—	**प्रशंसा**
सहनशील	—	**असहनशील**	योग्य	—	**अयोग्य**
व्यक्तिगत	—	**सामाजिक**	शुरू	—	**अन्त**

(ख)

आदर	—	इज्जत, मान	वेतन	—	तनख्वाह, रोजी
महिला	—	स्त्री, औरत	बालक	—	लड़का, कुमार

(ग)

शर्त	—	**शर्तें**	दरवाजा	—	**दरवाजे**
सड़क	—	**सड़कें**	आँख	—	**आँखें**
जूता	—	**जूते**	पंक्ति	—	**पंक्तियाँ**
महिला	—	**महिलाएँ**	पुस्तक	—	**पुस्तकें**

(घ) शिष्टाचार — श् + इ + ष् + ट् + आ + च् + आ + र् + अ

अभिवादन — अ + भ् + इ + व् + आ + द् + अ + न् + अ

सहनशीलता — स् + अ + ह् + अ + न् + अ + श् + ई + ल् + अ + त् + आ

परेशानी — प् + अ + र् + ए + श् + आ + न् + ई

अभिनन्दन-4

नए साल में कविता 1

(क) मौखिक

1. नया संदेश लेकर सुबह आती है।
2. चाँद-सितारे अंबर की शान हैं।
3. झरना नए तराने सुनाता है।
4. जहाँ-जहाँ अन्धेरा है, कवि वहाँ प्रकाश भरने को कह रहा है।

(ख) लिखित

1. चाँद-सितारे बच्चों से सारे जग में चमकने को कहते हैं।
2. झरना राह में कभी न रुकने की शिक्षा देता है।
3. खेतों में नई फसल के घुँघरू बजते हैं।
4. पंछी नए साल का स्वागत करने को कहते हैं।

(ग)

1. जीवन की राह में रुकना नहीं चाहिए किसी बहाने का सहारा न लेते हुए पिछली सभी बातों को भूलकर जीवन में आगे बढ़ना चाहिए।
2. जीवन में जहाँ-जहाँ अन्धकार (अज्ञानता) है, वहाँ प्रकाश (ज्ञान) की नई किरणें भरो।

भाषा-बोध

(क)

नया	गया	रुकना	फुकना
दिन	किन	पिछला	छिछला
सुबह	प्रातः	रोशनी	मोरनी

(ख)

बच्चा	शिशु, बालक	अंबर	आसमान, आकाश
चाँद	चन्द्रमा, शशि	तम	अन्धकार, अन्धेरा

(ग)

मन	चित्त	चालीस सेर की तौल
साल	वर्ष	साल का वृक्ष
अंबर	आकाश	रुई रेशम की वस्तु
किरण	तीर	सूर्य की किरण

(घ)

गीत	पुल्लिग	चाँद	पुल्लिग
राह	स्त्रीलिंग	घुँघरू	पुल्लिग
किरण	स्त्रीलिंग	झरना	पुल्लिग

बीरबल की खिचड़ी

2

(क) मौखिक

1. बीरबल बादशाह अकबर के दरबार में मन्त्री थे।
2. नगर में घोषणा करवाई गई कि जो व्यक्ति रात-भर शाही तालाब के ठण्डे पानी में खड़ा रहेगा, उसे पाँच सौ असर्फियाँ इनाम में दी जाएँगी।
3. बीरबल ने बादशाह को संदेश भिजवाया कि बीरबल खिचड़ी पका रहे हैं। जब खिचड़ी पक जाएगी तो वह खिचड़ी खाकर दरबार में आएँगे।
4. बीरबल खिचड़ी अपने घर पर पका रहे थे। दस-दस फुट ऊँचे बाँस के डंडे गाड़कर, उन पर एक रस्सी से छोटी-सी हाँडी लटकाकर तथा नीचे थोड़ी-सी आग जलाकर, बीरबल खिचड़ी पका रहे थे।

(ख) लिखित

1. बादशाह व्यक्ति की हिम्मत को आजमाना चाहते थे।
2. एक दुबला-पतला गरीब आदमी ठंडे पानी में रातभर खड़ा रह पाया।
3. बादशाह ने कहा कि तुम्हें दिए की गर्मी मिलती रही, उसी से तुम ठण्डे पानी में खड़े रह सके। इसलिए तुम्हें इनाम नहीं मिलेगा।
4. बीरबल ने बादशाह को समझाते हुए कहा कि हुजूर, अगर सौ गज की दूरी पर जलते हुए छोटे से दिए से एक आदमी को गर्मी मिल सकती है तो दस फुट की दूरी पर जलती आग से खिचड़ी क्यों नहीं पक सकती?

(ग)

- बुद्धिमान — अकलमन्द
  बीरबल बहुत अधिक **बुद्धिमान** थे।
- अशर्फ़ियाँ — मोहरें
  पाँच सौ **अशर्फ़ियाँ** इनाम में रखी गयी थी।
- इनाम — पुरस्कार
  अकबर ने गरीब आदमी को **इनाम** दे दिया।
- संदेश — सूचना
  बादशाह को बीरबल का **संदेश** अजीब लगा।

भाषा-बोध

(क)

2. बीरबल ने कहलवा दिया।
3. बादशाह ने उस आदमी को बुलवाया।

4. माताजी ने खाना बनवाया।
5. अध्यापिका ने कुछ शब्द लिखवा दिए।

(ख)

बादशाह	—	नौकर	अमीर	—	गरीब
रात	—	दिन	बाहर	—	अन्दर
बुद्धिमान	—	मूर्ख	इनाम	—	दण्ड

(ग)

मंत्री	सिपाही	आदमी	बादशाह
राजा	व्यक्ति	गरीब	तालाब

(घ)

बादशाह — ब् + आ + द् + अ + श् + आ + ह् + अ
बुद्धिमान — ब् + उ + द् + ध् + इ + म् + आ + न् + अ
मौसम — म् + औ + स् + अ + म् + अ
खिचड़ी — ख् + इ + च् + अ + ड़् + ई
विश्वास — व् + इ + श् + व् + आ + स् + अ
बीरबल — ब् + ई + र् + अ + ब् + अ + ल् + अ

(ङ)

पानी — जल, शर्म उतरना
काम — कार्य, वासना का काम
कर — कार्य करना, ब्याज
ताल — सुर वाली ताल, तालाब

(च)

बादशाह	—	पुल्लिग	तालाब	—	पुल्लिग
सिपाही	—	पुल्लिग	असर्फी	—	स्त्रीलिंग
खिचड़ी	—	स्त्रीलिंग	हाँडी	—	स्त्रीलिंग
बाँस	—	पुल्लिग	रस्सी	—	स्त्रीलिंग

स्वावलंबी (कहानी) 3

(क) मौखिक

1. माँ ने मनोज से गेहूँ पिसवाकर लाने को कहा।
2. मनोज शर्म इसलिए महसूस कर रहा था क्योंकि उसको लग रहा था कि यदि मैं जाऊँगा तो लोग क्या कहेंगे?
3. मनोज के सहपाठी का नाम निर्मल था।
4. मनोज को आश्चर्य निर्मल को झाड़ू लगाते देखकर हुआ।

(ख) **लिखित**

1. माँ ने मनोज को समझाया कि ''बेटा काम मेरा या तेरा नहीं होता। ये नियम हमारे ही बनाए हुए हैं कि यह काम इसका है और वह काम उसका है।''
2. मनोज के यह कहने पर कि माँ, ''मैंने यह काम कभी नहीं किया है'' माँ को हँसी आ गयी।
3. चक्कीवाले ने मनोज से कहा—''भैया, एक दो आदमी और आ जाएँ, तो चक्की चालू करूँगा। आपको कोई और काम हो तो वह कर आएँ।''
4. निर्मल को झाड़ू लगाते देखकर और उसकी बातें सुनकर मनोज को स्वावलंबी बनने की शिक्षा मिली।''

(ग)

1. मनोज की माँ ने मनोज से
2. मनोज ने चक्की वाले से
3. निर्मल ने मनोज से

(घ) 1. चक्की पर गेहूँ पिसवाकर लाना 2. निर्मल

भाषा-बोध

(क)

माँ	—	माता, जननी	बालक	—	बाल, लड़का
मदद	—	सहायता, सहयोग	दिन	—	वार, दिवस

(ख)

डिब्बा	ब्बा	मुरब्बा	अब्बा
चक्की	क्क	धक्का	मक्का
आश्चर्य	चर्य	ब्रह्मचर्य	दिनचर्या

(ग)

मीठा	बिस्कुल
नई	साइकिल
अच्छा	बालक
भारी	डिब्बा

(घ)

नौकर	— मालिक	—	**मालिक** ने **नौकर** को चाय बनाने के लिए कहा।
दिन	— रात	—	**दिन-रात** मेहनत करनेवाले की तो भगवान मदद करता है।
फायदा	— नुकसान	—	**फायदा** और **नुकसान** तो व्यापार में लगे रहते हैं।
स्वावलम्बी	— परावलम्बी	—	इन्सान को **स्वावलम्बी** बनना चाहिए न कि **परावलम्बी**।

(ङ) छुट्टी — छुट्टियाँ   साइकिल — साइकिलें
रात — रातें   चक्की — चक्कियाँ
डिब्बा — डिब्बे   दुकान — दुकानें

शरारत का फल 4

(क) मौखिक

1. हिमांशु को शरारत करना और खेलकूद करना पसन्द है।
2. तीन टाँगों वाली कुर्सी हिमांशु लाता है।
3. मास्टर जी कक्षा में आते ही, बच्चों से पूछते हैं कि आज कौन-सा वार है?
4. अध्यक्ष की कुर्सी हिमांशु संभालता है।

(ख) लिखित

1. हिमांशु मास्टर जी को कुर्सी से गिराने की कोशिश करता है।
2. मास्टर जी बाल-सभा का अध्यक्ष हिमांशु को चुनते हैं।
3. हिमांशु को अपनी शरारत का फल मिलता है कि वह खुद कुर्सी से गिर जाता है।
4. चिंटू 'राशन कार्ड' और 'सच का ठाठ' दो कविताएँ सुनाता है।

(ग) 1. हिमांशु   2. चिंटू

भाषा-बोध

(क) पसंद — नापसंद   सहमत — असहमत
शांत — अशांत   इधर — उधर
अच्छा — बुरा   उजियारा — अंधियारा

(ख) शिक्षक — गुरु, आचार्य   शांत — मौन, गंभीर
लड़का — बालक, शिशु   दिन — दिवस, वासर

(ग) ओर — एक तरफ
और — एक से दो वस्तुओं के लिए प्रयुक्त होता है
धुन — लगन
दिन — वार
धूल — मिट्टी
अजर — अमर

(घ) बालक — बालिका   लड़का — लड़की

अध्यक्ष	—	अध्यक्षिका	शिक्षक	—	शिक्षिका
भाई	—	बहन	बंदर	—	बंदरिया

पानी और धूप 5

(क) मौखिक

1. सूरज अपनी माँ के कहने पर अपने घर का दरवाजा बन्द करता है।
2. तलवार बिजली के आँगन में चलती हैं।
3. पुलिसमैन काका को पकड़ने आते हैं।
4. इस कविता की कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान हैं।

(ख) लिखित

1. सूरज के अपने घर का दरवाजा बन्द करने के कारण धूप समाप्त हो जाती है।
2. बिजली के आँगन में तलवार चलाने वालों के वार खाली जाते हैं।
3. बच्चा, बिजली के बच्चों को तलवार सिखाने के लिए उनके घर जाना चाहता है।
4. अत्याचार तब समाप्त होंगे, जब बिजली बच्चे को एक चमकती तलवार दे देगी।
5. माँ बच्चे को समझाती है कि वह कभी बिजली के घर जाने की बात न करे, वो उसके लिए एक तलवार मँगा देंगी।

(ग)

1. बच्चा अपनी माँ से कहता है कि बिजली के घर में कितनी तलवारें चलती हैं, पर फिर भी उसके वार खाली क्यों रह जाते हैं?
2. माँ बच्चे से कहती हैं कि काका को पुलिसमैन जेल नहीं ले जा पाएगा। मैं तुम्हारे लिए तलवार मँगा दूँगी, लेकिन तुम कभी बिजली के घर जाने की बात मत करना।

भाषा-बोध

(क)

अम्मा	—	माँ, माता	सूरज	—	सूर्य, भास्कर
तलवार	—	खड्ग, कृपाण	बच्चा	—	शिशु, बालक
बादल	—	मेघ, जलधर	डर	—	भय, खौफ

(ख)

दरवाजा — द् + अ + र् + अ + व् + आ + ज् + आ

आसमान — आ + स् + अ + म् + आ + न् + अ

अत्याचार — अ + त् + य् + आ + च् + आ + र् + अ

(ग) **विपरीत अर्थ**

धूप	—	छाँव	बंद	—	खुला
जमीन	—	आसमान	खुश	—	दुखी

आम का पेड़ 6

(क) **मौखिक**

1. प्रतीक ने दादाजी से पूछा कि आज आप उदास क्यों बैठे हैं?
2. प्रतीक आम के पेड़ के नीचे खेलने गया।
3. वंश कहता है कि मेरे दादाजी ने तो हमारे खेत में खड़े सभी पेड़ों को कटवा दिया था।
4. आम के पेड़ कटने के साथ-साथ ही प्रतीक के दादाजी के प्राण निकल गए क्योंकि वे उसे अपने पुत्र की तरह मानते थे।

(ख) **लिखित**

1. प्रतीक मन ही मन अपने दादाजी और माँ की चिन्ता का कारण खोज रहा था।
2. प्रतीक अपने मित्र से कहता है कि मेरे दादाजी आम के इस पेड़ को अपने दूसरे पुत्र यानी पापाजी के छोटे भाई का दर्जा देते हैं।
3. दादाजी को आम का पेड़ बेचने पर विवश इसलिए होना पड़ा क्योंकि प्रतीक के पिता के इलाज के लिए बड़ी रकम की जरूरत थी।
4. यह कहानी हमें प्रकृति से प्रेम करने की शिक्षा देती है।

(ग) 1. दादाजी ने प्रतीक से

2. माँ ने प्रतीक से

(घ) 1. प्रतीक, यह आम का पेड़ किसने लगाया था। (✓)

2. शल्य-चिकित्सा के लिए बड़ी रकम खर्च करनी पड़ेगी। (✓)

भाषा-बोध

(क)

दिन	—	वार, वासर	मित्र	—	दोस्त, साथी
माँ	—	माता, जननी	आँख	—	चक्षु, नयन

(ख)

मीठा	आम
गहरी	चिंता

अच्छा दिल

पीली चिड़िया

(ग) चरण — पैर, क्रम   आम — फल (आम), सामान्य

कर — ब्याज, कार्य करना   जीवन — जिन्दगी, विचार

श्रम का महत्त्व 7

(क) मौखिक

1. प्रसिद्ध वैज्ञानिक ने अपनी सफलता के विषय में कहा कि मेरी सफलता का रहस्य 1 प्रतिशत प्रतिभा और 99 प्रतिशत श्रम रूपी पसीने की बूँदें हैं।
2. कहते हैं, जहाँ चाह, वहाँ राह। हमारी चाह बिना श्रम के राह नहीं बना सकती। इच्छाशक्ति भी आवश्यक है, लेकिन इच्छापूर्ति के लिए श्रम का बहुत महत्व है, इसलिए कहा जाता है, श्रम सुख का साधन है।
3. अधिकांश बच्चे चाहते हैं कि कक्षा में उनके कार्य की प्रशंसा हो।
4. उत्तम जन बाधाओं के बार-बार आने पर भी, शुरु किए गए काम को अधूरा नहीं छोड़ते, उसे पूरा करके ही दम लेते हैं।

(ख) लिखित

1. इच्छापूर्ति के लिए श्रम की आवश्यकता होती है।
2. चीटीं हमें श्रम करने की शिक्षा देती है।
3. नीच लोग बाधाओं के डर से काम को शुरु ही नहीं करते हैं। और मध्यम लोग काम शुरु तो कर देते हैं, पर बीच में अधूरा छोड़ देते हैं।
4. मन की शक्ति बाधाओं को दूर करने में परिश्रम को ताकत देती है।

(ग) रहस्य — राज — उसकी सफलता का क्या **रहस्य** है?

परिश्रम — मेहनत — **परिश्रम** ही सफलता की कुंजी है।

प्रशंसा — तारीफ — अधिकतर बच्चे चाहते हैं कि कक्षा में उनके कार्य की **प्रशंसा** हो।

अपमान — बेइज्जती — सफल और परिश्रमी व्यक्ति **अपमान** से बच जाता है।

भाषा-बोध

(क) शक्ति — क्ति — भक्ति, मुक्ति

प्राप्त — प्त — संक्षिप्त, लिप्त

इच्छा — च्छा — लच्छा, अच्छा

(ख) रहस्य — र् + अ + ह् + अ + स् + य् + अ

प्रदर्शन — प् + र् + अ + द् + अ + र + श् + अ + न् + अ

आलस्य — आ + ल् + अ + स् + य् + अ

(ग) 1. आगे-आगे 2. उधर

3. केवल 4. अवश्य

5. निरन्तर

(घ) इच्छा — इच्छाएँ चींटी — चींटियाँ

कक्षा — कक्षाएँ आदत — आदतें

भूमि — भूमियाँ कापी — कापियाँ

पश्चाताप 8

(क) मौखिक

1. श्यामू शंकरलाल बाबू के बड़े भाई दीनदयाल बाबू का बड़ा प्यारा नौकर था।
2. दीनदयाल बाबू के छोटे भाई का नाम शंकरलाल बाबू था।
3. श्यामू को छोटे बाबू का बिस्तर न लगा सकने की बेचैनी थी।
4. छोटे बाबू को यह गलती कमजोर किए जा रही थी कि उन्होंने श्यामू को इस तरह डाँटकर और गहरी नींद से उठाकर अच्छा नहीं किया।

(ख) लिखित

1. मालकिन उसे समझाती है कि श्यामू तू इतना काम मत कर, और भी तो नौकर हैं, वे कर लेंगे।
2. श्यामू घर की साफ-सफाई से लेकर दीनदयाल बाबू के पैर दबाने तक, सभी काम, वह बड़े चाव से करता था।
3. छोटे बाबू ने श्यामू को बिस्तर न बिछाने पर डाँटा।
4. छोटे बाबू ने श्यामू को डाँटा था। उनकी इस बात का उनको दु:ख हुआ।

(ग) 1. मालकिन ने श्यामू से 2. छोटे बाबू ने श्यामू से

3. श्यामू ने मालकिन से

भाषा-बोध

(क) 1. मालिक 2. अर्धांगिनी 3. बेहोश 4. अच्छा

(ख) 2. समझाना 3. जाना 4. सोना 5. बजना

(ग) बस — 1. **यातायात का साधन–**हम **बस** में घूमने जा रहे थे।
2. **मना करना–**अब **बस** भी करो, बहुत शैतानी हो चुकी है बच्चो।

सोता — 1. **पहाड़ी से गिरने वाली जलधारा–**वह **सोता** कितना सुन्दर है।
2. **सोना–**सोनू कब तक **सोते** रहोगे, उठ जाओ?

कर — 1. **काम करना–**बच्चों अपनी किताब खोलो और याद **कर** लो।
2. **उधार–**रामू ने दो बैल लेने के लिए, सेठ जी से **कर** लिया था।

(घ)

बालक	—	बालिका	मालिक	—	मालकिन
दादा	—	दादी	नौकर	—	नौकरानी
भाई	—	भाभी	पति	—	पत्नी

बेटी को पत्र 9

(क) **मौखिक**

1. यह पत्र 12/5/1960 को लिखा गया।
2. लेखक को जया बेटी और भैया की याद आ रही थी।
3. भगवान बुद्ध माँ की तरह गरीबों की सेवा करते थे।

(ख) **लिखित**

1. श्रीलंका में भगवान बुद्ध के जन्मदिन का उत्सव मनाया जा रहा था।
2. लेखक ने मोरटुबा स्टेशन के पास देखा कि बच्चे चेहरा लगाकर नाच रहे थे। कोई टिकट नहीं था। लोग घेर कर 'ऑरेंजक्रश', 'लेमनेड', शरबत आदि पिला रहे थे। पैसे से नहीं, यूँ ही। भगवान का जन्मदिन था न!
3. बच्चे चेहरा लगाकर नाच रहे थे।

(ग)

1. श्रीलंका में कल और आज इतना उत्सव मनाया गया कि कुछ न पूछो। मुझे बराबर तुम्हारी और भैया की याद आती रही।
2. पैसे से नहीं, यूँ ही। भगवान का जन्मदिन था न!
3. कोलम्बो शहर में रात को भी दुकानें खुली थीं।
4. भगवान बुद्ध की बहुत बड़ी तश्वीर सजायी गयी थी।

(घ) उत्सव — पर्व — भगवान बुद्ध के जन्मदिन का **उत्सव** मनाया गया था।

चेहरा — मुखड़ा — बच्चे **चेहरा** लगाकर नाच रहे थे।

महापंडित — ज्ञानी — स्वर्गीय **महापंडित** राहुल सांकृत्यायन ने चीन और श्रीलंका के प्रवास काल में अपने बच्चों को पत्र लिखा।

रोशनी — प्रकाश — महात्मा बुद्ध के जन्मदिन पर सड़कों पर बहुत **रोशनी** थी।

भाषा-बोध

(क) **विलोम–**

	कल	—	आज	पास	—	दूर
	दिन	—	रात	दु:खी	—	खुशी
	खुश	—	दुखी	खुली	—	बन्द
	गरीब	—	अमीर	प्रकाश	—	अन्धकार
(ख)	दिन	—	दिवस, वासर	गरीब	—	दरिद्र, निर्धन
	घास	—	दूब, तृण	रात	—	निशा, रात्रि
	प्रकाश	—	ज्योति, प्रभा			

(ग)

जलता	दीप
सुन्दर	चेहरा
दुखी	आदमी
ठंडी	आइसक्रीम
हरी	घास

महात्मा गाँधी 10

(क) **मौखिक**

1. महात्मा गाँधी का पूरा नाम मोहनदास करमचन्द गाँधी था।
2. श्रवण कुमार का चित्र देखकर बालक के मन में आया कि मुझे भी श्रवण के समान माता–पिता की सेवा करनी चाहिए।
3. दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह के प्रभाव से दक्षिण अफ्रीका के लोगों की हिम्मत बहुत बढ़ी। उनकी कुछ कठिनाइयाँ भी दूर हुई और संसार ने युद्ध करने का एक नया ढंग सीखा।

4. एक बार नमक पर लगे कर का विरोध करने के लिए गाँधी जी अपने बहुत से साथियों को लेकर समुद्र के किनारे डांडी नामक स्थान पर पहुँचे। यह यात्रा डांडी यात्रा कहलाई।

(ख) लिखित

1. महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर, सन् 1869 को पोरबन्दर नामक स्थान पर हुआ था।
2. गाँधीजी के मन पर 'सत्यवादी हरिश्चंद्र' नामक नाटक का प्रभाव पड़ा कि उनके मन में यह बात समा गई कि हरिश्चन्द्र जैसे सत्यवादी सब क्यों नहीं हो जाते?
3. गाँधीजी इंग्लैण्ड कानून पढ़ने गये।
4. सत्य के लिए बिना दूसरे को चोट पहुँचाए, लड़ने को गाँधीजी 'सत्याग्रह' कहते थे।
5. दक्षिण अफ्रीका से भारत लोटने के बाद गाँधीजी ने सत्य के लिए सत्याग्रह शुरु किया। स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार तथा नमक पर लगे कर का विरोध किया। तथा भारत छोड़ों का नारा लगाकर 15 अगस्त, 1947 को आजादी प्राप्त कर ली।

(ग)

1. विद्यार्थी जीवन में बालक मोहनदास ने एक बार 'सत्यवादी हरिश्चंद्र' नाटक देखा।
2. चित्र देखकर बालक के मन में आया कि मुझे भी श्रवण के समान माता पिता की सेवा करनी चाहिए।
3. कुछ समय बाद गाँधीजी के एक मित्र ने उन्हें एक मुकदमा लड़ने के लिए दक्षिण अफ्रीका बुलाया।
4. उस समय यहाँ अंग्रेजों का राज्य था, जिससे हमारे देशवासी छुटकारा चाहते थे।

भाषा-बोध

(क) गुजरात — गुजराती   विवाह — विवाहिक

वर्ष — वार्षिक   इतिहास — ऐतिहासिक

(ख) 1. मृत्यु   2. शत्रु   3. सही

4. स्वदेशी   5. स्वतन्त्र

(ग) पुत्र — बेटा, सुत   घर — ग्रह, भवन

माँ — माता, जननी

स्वतन्त्रता — आजादी, मुक्ति

(घ) पिता — पत्नी
पुत्र — माता
पति — पुत्री

(रेखाओं द्वारा मिलान: पिता — माता, पुत्र — पुत्री, पति — पत्नी)

बेटा—बेटी
बालक—बालिका
सेवक—सेविका

फूलों का नगर 11

(क) मौखिक

1. गुरु वशिष्ठ ने अमृत और शांतनु से कहा कि अहिंसा का मार्ग अपनाना तथा सदा प्रकृति की रक्षा करना।
2. शांतनु ने राजा बनते ही शिकार पर जाना शुरू कर दिया। हरे-भरे वृक्षों को कटवाकर उसने कई नगर बसाये।
3. शांतनु अमृत के राज्य पर आक्रमण करना चाहता था।
4. शांतनु के आक्रमण करने पर अमृत के सैनिकों ने मधुमक्खियों के छत्तों पर गुलेल से वार किया और छिप गये। मधुमक्खियाँ गुस्से से शांतनु की सेना पर टूट पड़ी। इससे जन-धन की कोई हानि नहीं हुई। इस तरह अमृत ने अपनी दूरदर्शिता का परिचय दिया।

(ख) लिखित

1. अमृत ने राजा बनते ही शिकार पर प्रतिबन्ध लगा दिया और जगह-जगह पेड़ लगाने शुरू कर दिए।
2. शांतनु के राज्य में पर्यावरण असंतुलन का कारण पेड़ों का कटवाना था।
3. शांतनु की सेना को पीछे हटाने का कार्य मधुमक्खियों ने उन पर हमला करके किया। क्योंकि शांतनु की सेना के आने पर अमृत के सैनिकों ने गुलेल से छत्तों पर वार कर दिया था।
4. अमृत ने शांतनु की सहायता धन और फूलों के बीज देकर की।

(ग) 1. आज्ञा 2. शिकार 3. बगीचे
4. तलवारें 5. फूलों का नगर

भाषा-बोध

(क) गुरु — शिक्षक, उपाध्याय, आचार्य
राजा — नरेन्द्र, भूपति, नरपति
उपवन — बगीचा, बाग, उद्यान

	फूल	—	पुष्प, सुमन, कुसुम			
(ख)	गुरु	—	शिष्य	राजा	—	रंक
	प्रसन्न	—	दु:खी	बंदी	—	मुक्त
	प्रतिबन्ध	—	अनुमति	युद्ध	—	संधि
(ग)	गुरु	—	गुरुमाँ	बूढ़ा	—	बुढ़िया
	घोड़ा	—	घोड़ी	शिष्य	—	शिष्या
	राजा	—	रानी	बालक	—	बालिका
(घ)	प्रकृति	—	प् + र् + अ + क् + र् + अ + त् + इ			
	पर्यावरण	—	प् + अ + य् + र् + आ + व् + अ् + र् + अ + ण् + अ			
	खूबसूरती	—	ख् + ऊ + ब् + अ + स् + ऊ + र् + अ + त् + ई			

रंग-बिरंगे पक्षी 12

(क) मौखिक

1. वर्षा ऋतु में मोर अपने नाच से सबका मन मोह लेता है।
2. पक्षियों का कलरव वातावरण को सजीव बना देता है।
3. संसार का सबसे छोटा पक्षी 'बी हमिंग बर्ड' है, जो क्यूबा में पायी जाती है।
4. 'पेरिग्रेन फाल्कन' संसार का सबसे तेज गति से उड़ने वाला पक्षी है।
5. नीलकण्ठ अपने स्वभाव से झगड़ालू पाया जाता है।

(ख) लिखित

1. भारतीय चिड़ियों में सबसे छोटी चिड़िया 'फुलचुही' है। 'शकरखोरा' भी छोटी चिड़ियों में गिनी जाती है। हमिंग बर्ड उड़ती-उड़ती ही फूलों का रसपान करती है। 'शुतुरमुर्ग', सबसे तेज दौड़ने वाला पक्षी है। 'कठफोड़वा', पेड़ के तने में रहने वाला पक्षी है। 'नीलकण्ठ' सुन्दर होने के साथ झगड़ालू है। 'किंगफिशर' पानी के आस-पास ही रहता है। नन्हें बया पक्षी का घोंसला तो मनुष्य देखता ही रह जाता है। 'भुजंगा' पक्षी छोटी चिड़ियों में सबसे बहादुर होता है। बुलबुल, पपीहा, कोयल आदि प्रिय पक्षी हैं।
2. लगभग साठ-सत्तर लाख वर्ष पहले एक ऐसा पक्षी जीवित था, जिसका भार 150 पौंड और पंखों का फैलाव 25 फुट था। चोंच से पूँछ तक इसकी लम्बाई 11 फुट और बैठने पर वह छह फुट ऊँचा रहता था। इस पक्षी के जीवावशेष, आज भी लॉस एंजल्स के म्यूजियम में देखे जा सकते हैं।

3. शुतुरमुर्ग जमीन पर सबसे तेज दौड़ने वाला पक्षी है। यह 45 मील प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ सकता है। यह एक कदम में 25 फुट की दूरी तय करता है। शक्तिशाली शुतुरमुर्ग दो आदमियों को अपनी पीठ पर बैठाकर ले जा सकता है। एक शुतुरमुर्ग की ऊँचाई 8-9 फुट तक होती है। इसके एक अंडे का भार 1.36 किलोग्राम तक होता है।
4. बाज छोटी चिड़ियों को ही नहीं, अपितु तोता, कबूतर, वनमुर्गी जैसे पक्षियों का भी शिकार कर लेता है।
5. चील, कौए और बंदर, भुजंगा पक्षी के घोंसले के पास नहीं फटकते।

(ग) 1. पक्षियों 2. बी हमिंग बर्ड 3. शुतुरमुर्ग
4. नीलकंठ 5. चकवा—चकवी, क्रंदन

भाषा-बोध

(क) वर्षा — चौमासा, पावस, वर्षाकाल
पक्षी — पंछी, चिड़िया, विहग
मोर — मयूर, कलापी, शिखि
वृक्ष — पादप, विटप, पेड़
रात — रात्रि, निशा, रजनी

(ख) 1. गमन 2. वृद्धि 3. नग

(ग) 1. मनुष्य के साथ पक्षियों का अटूट संबंध है।
2. मेंढक, चूहे, छिपकली, साँप आदि अनोखे जीव हैं।
3. क्या आपने शुतुरमुर्ग को देखा है?
4. वाह! कितना सुन्दर पक्षी है?
5. पिता जी बोले—पक्षी हमारे मित्र हैं।

रात यों कहने लगा चाँद 13

(क) मौखिक

1. कवि आदमी को अनोखा जीव बताता है।
2. मनुष्य को जनमते-मरते चाँद ने देखा है।
3. कवि आदमी के स्वप्न को जल का बुलबुला बताता है।
4. 'स्वप्न मेरे बुलबुले' से तात्पर्य पानी से है।

(ख) लिखित

1. आदमी की विशेषता है कि वह अपनी उलझने बनाकर खुद उसमें फँस जाता है।
2. कवि आदमी की प्रशंसा करते हुए कहता है कि आदमी स्वप्न देखता ही नहीं, उसे साकार भी करता है।
3. मनु नहीं है, आज लेकिन मनु का पुत्र मानव, जिसकी कल्पना लफ्जों द्वारा बयां हो जाती है। केवल विचारों के तीर ही नहीं होते स्वप्न को साकार करने की क्षमता भी होती है।
4. स्वर्ग के सम्राट से तात्पर्य इन्द्र से है।

(ग)

1. आदमी का स्वप्न, जल के बुलबुले की तरह है। आज देखता है, कल फिर भूल जाता है।
2. आज मनु नहीं है, मनु का पुत्र है, जिसकी कल्पना लफ्जों में बयां होती हैं।
3. स्वर्ग के सम्राट यानि की इन्द्र को जाकर खबर कर दे कि मनुष्य दिन प्रति–दिन आकाश की तरफ बढ़ रहा है।

भाषा-बोध

(क)	अनोखा	—	विचित्र	गगन	—	आकाश
	मनु	—	मानव	घन्य	—	कृतज्ञ
	बाण	—	तीर	सम्राट	—	राजा
(ख)	पुराना	—	नया	स्वर्ग	—	नरक
	पागल	—	अक्लमन्द	आकाश	—	पाताल
	सुन्दर	—	कुरुप	जागना	—	सोना
(ग)	रात	—	रातें	बुलबुला	—	बुलबुले
	रागिनी	—	रागिनियाँ	दीवार	—	दीवारें
	रास्ता	—	रास्ते	रस्सी	—	रस्सियाँ
(घ)	चाद	—	चाँद	गाव	—	गाँव
	नीव	—	नींव	जग	—	जंग
	कितु	—	किंतु	बदर	—	बंदर
	हू	—	हूँ	माग	—	माँग

लालची ब्राह्मण 14

(क) **मौखिक**

1. वाराणसी के निकट गंगा नदी के किनारे, एक गाँव में दीनू अपनी पत्नी के साथ रहता था।
2. दीनू की पत्नी ने उसे हिमालय की यात्रा पर जाने के लिए कहा क्योंकि उसे लगता था कि हिमालय पर साधु सन्त रहते हैं, जिनमें निर्धनता दूर करने की शक्ति है।
3. महात्मा ने दीनू को शंख दिया।
4. ब्राह्मण ने दीनू का शंख चुरा लिया और अपना शंख वहाँ रख दिया।

(ख) **लिखित**

1. दीनू को हिमालय की यात्रा करते वक्त ठण्ड और थकावट का सामना करना पड़ा।
2. महात्मा ने दीनू की गरीबी दूर करने के लिए उसे एक शंख दिया और कहा सुबह नहा–धोकर इसे बजाना, तुम्हें एक सोने की असर्फी मिलेगी।
3. दीनू ने ब्राह्मण को बताया कि सुबह नहा–धोकर इस शंख को बचाने से यह एक सोने की असर्फी देता है।
4. ब्राह्मण को अपने लालच का फल मिला कि उससे असर्फी देने वाला शंख छिन गया।

(ग)

1. दीनू की पत्नी ने दीनू से
2. दीनू ने अपनी पत्नी से
3. शंख ने ब्राह्मण से

भाषा-बोध

(क)	पुरानी	—	नयी	निर्धनता	—	अमीरी
	गाँव	—	शहर	रात	—	दिन
(ख)	निर्धनता	—	अमीरी (✗)	गरीबी (✓)	—	दरिद्रता (✓)
	दिन	—	दिवस (✓)	वार (✓)	—	निशा (✗)
	पर्वत	—	पहाड़ (✓)	नाग	—	नग (✓)
	पत्नी	—	वनिता (✗)	भार्या	—	अर्धांगिनी (✓)

(ग) 1. दीनू 2. दीनू की पत्नी 3. दीनू 4. शंख

(घ) उत्तर — दिशा, प्रश्न का उत्तर
बस — यातायात का साधन, काफी
पानी — शर्म, जल

सेनापति का चुनाव 15

(क) **मौखिक**

1. महाराज रिपुदमन की चिंता का कारण किसी व्यक्ति के द्वारा सेनापति की परीक्षा में उत्तीर्ण न होना था।
2. रानी ने महाराज रिपुदमन को सुझाव दिया कि आप उप–सेनापति को ही सेनापति क्यों नहीं बना देते?
3. शत्रुघ्न राजधानी के पास पुष्पपुर का रहने वाला एक युवक था। वह शिक्षा पूरी करके राजधानी में अपना भाग्य आजमाने आया था।
4. एक सरोवर के बीच गड़े हुए लकड़ी के स्तम्भ में बिना प्रवेश किए रस्सी फाँसकर, शत्रुघ्न ने पहली परीक्षा उत्तीर्ण की।

(ख) **लिखित**

1. महाराज रिपुदमन को युद्ध की आशंका थी।
2. सेना में गुटबाजी बढ़ने के कारण सेनानायक रुष्ट हो गये थे।
3. महाराज को एक सुयोग्य सेनापति शत्रुघ्न के रूप में तीन परीक्षाएँ उत्तीर्ण करके मिला।
4. युवक ने शिला प्रक्षेपक नाम का यन्त्र बनाया था। युवक ने यन्त्र में लगे तख्ते को झुकाकर उसके एक सिरे पर पत्थर को टिका दिया। फिर उठे हुए दूसरे सिरे पर तीन–चार बलिष्ठ युवकों के साथ चढ़कर जोर से झटका दिया। झटका लगते ही पत्थर क्षणभर में ही किले की दीवार के पास धड़ाम से जा गिरा और शत्रुघ्न ने परीक्षा पास कर ली।
5. सेनापति के चुनाव का समाचार सीमा के पार के राज्यों में भी पहुँच गया। उन राज्यों के राजाओं ने ऐसे सुयोग्य सेनापति के बारे में सुनकर महाराज रिपुदमन सिंह के राज्य पर आक्रमण का विचार त्याग दिया।

(ग) 1. युद्ध 2. स्तम्भ 3. निर्णायक
4. पुष्पपुर 5. पुत्री

(घ) आत्मघात — आत्महत्या — ऐसे समय में तुम्हारे भाई को सेनापति बनाना **आत्मघात** जैसा होगा।

संतोष	—	संतुष्टि	—	महाराज ने **संतोष** की साँस ली।
तेजस्वी	—	तेजवान	—	एक नजर देखते ही लगता था कि युवक **तेजस्वी** और सुयोग्य है।

भाषा-बोध

(क)

सम	—	विषम	सहजता	—	कठिनता
गुण	—	अवगुण	अपना	—	पराया
संतोष	—	असंतोष	प्रिय	—	अप्रिय
लंबी	—	चौड़ी	निर्माण	—	विनाश

(ख) 2. आत्मघात्   3. युवक

(ग)

प्रजा,	प्रकाश,	क्रम,	प्रपात,	भ्रम
वर्ष,	दर्द,	धर्म,	पर्वत,	उत्तीर्ण

(घ)

विभाग	निर्जन
विशेष	निर्बल
विशिष्ट	निर्गुण
विजय	निर्धन

नीम हकीम 16

(क) मौखिक

1. गोपीलाल एक देहाती लड़का था।
2. ऊँट वाले ने वैध जी को दो रुपये दिए।
3. रोगी ने आलू खाया था। इसलिए रोगी की हालत बिगड़ गयी थी।
4. गोपीलाल ने एक पत्थर बुढ़िया की गरदन के नीचे रखकर, दूसरे से इतने जोर से वार किया कि बुढ़िया के प्राण निकले गए इसलिए गोपीलाल को जेल जाना पड़ा।

(ख) लिखित

1. ऊँट की गरदन सूज गयी थी। वैध जी ने दो बड़े–बड़े पत्थर मँगवाए। एक को ऊँट की गर्दन के नीचे रखकर, दूसरे से फूली हुई जगह पर चोट की। इससे गले में फँसा हुआ तरबूज फूटकर भीतर चला गया।
2. वैद्ध जी ने रोगी की खाट के नीचे आलू के छिलके देखे थे इसलिए उनको पता चल गया कि रोगी ने आलू खाया है।

3. वैद्ध जी की फटकार से नाराज होकर गोपीलाल ने वैद्ध जी का साथ छोड़ दिया।

4. गोपीलाल ने अपनी मूर्खता के कारण एक बुढ़िया की जान लीं। उसने सोचा कि जैसे गुरु जी ने ऊँट की सूजी गर्दन का इलाज किया था, वैसे ही इस बुढ़िया का होगा और उसने एक पत्थर बुढ़िया की गर्दन के नीचे रखकर दूसरे से जोर से वार किया, जिससे बुढ़िया के प्राण निकल गए।

(ग) 1. ऊँट वाले ने वैध जी से 2. वैध जी ने ऊँट वाले से

3. रोगी ने वैध से 4. गोपीलाल ने वैध से

5. गोपीलाल ने वैध से

भाषा-बोध

(क)

जीवन	—	जिन्दगी, जो सबसे प्यारा
मन	—	चित्त, चालीस सेर की तौल
कर	—	काम करना, ऋण लेना
घास	—	तिनका, भाव
खाई	—	खाना, दो पहाड़ों के बीच घाटी
भाग	—	किसी चीज का एक हिस्सा, गणित का एक चिह्न।

(ख)

देहाती	—	शहरी	आदमी	—	औरत
अचेत	—	चेतना	सुबह	—	शाम
मूर्ख	—	ज्ञानी	स्वस्थ	—	अस्वस्थ

(ग)

लड़का	—	शिशु, बालक	रोगी	—	बीमार, अस्वस्थ
नदी	—	सरिता, धारा	आदमी	—	पुरुष, नर

(घ)

तरबूज	—	त् + अ + र् + अ + ब् + ऊ + ज् + अ
स्वस्थ	—	स् + व् + अ + स् + थ् + अ
भयानक	—	भ् + अ + य् + आ + न् + अ + क् + अ

दोहावली 17

(क) मौखिक

1. बात को हृदय के तराजू में तोलकर बोलना चाहिए।
2. आज का काम कल पर नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि एक क्षण के बाद क्या विपत्ति आ जाये या कुछ बात हो जाये कि हम कल वो काम न कर पाएँ।

3. मन को शीतल करने वाली बोली मन का आपा खोने वाली होनी चाहिए।
4. जो हमेशा सच बोलता है, उसके हृदय में ईश्वर का वास होता है।
5. जब तक मनुष्य के शरीर में प्राण हैं, उसे दया नहीं छोड़नी चाहिए।

(ख) लिखित

1. मनुष्य रात में सोकर और दिन में खाना खाकर अपने अनमोल जीवन को व्यर्थ करता है।
2. मीठे वचन वशीकरण का मन्त्र हैं।
3. रहीम जी निरन्तर अभ्यास का महत्व बताते हुए कहते हैं कि अभ्यास करने से एक मूर्ख इन्सान भी ज्ञानी बन सकता है, जिस प्रकार पत्थर पर बार–बार रस्सी घिसने से पत्थर पर भी निशान पड़ जाता है।
4. कवि खजूर के पेड़ के माध्यम से शिक्षा देना चाहता है कि उस व्यक्ति के बड़े होने से क्या फायदा, जो किसी के काम न आ सके?
5. शरीर में प्राण रहने तक दया का त्याग नहीं करना चाहिए।

(ग)

1. वाणी ऐसी बोलनी चाहिए जो खुद को भी अच्छी लगे और सामने वाले को भी।
2. सच्चाई के बराबर कोई तपस्या नहीं है और झूठ के बराबर कोई पाप नहीं है। जिसके हृदय में सच्चाई का वास होता है, उसके हृदय में ईश्वर का वास होता है।
3. जिसकी रक्षा भगवान करते हैं, उसको कोई नहीं मार सकता है। उसका बाल भी बाँका नहीं होता, चाहें संसार कितना भी दुश्मन बन जाए?

भाषा-बोध

(क)

हिये	—	हृदय	दोऊ	—	दोनों
बहुरि	—	व्यक्ति	औरन	—	दूसरा व्यक्ति
बसीकरन	—	वसीकरण	हिरदै	—	हृदय
रसरी	—	रस्सी	तखारि	—	तलवार

(ख)

अनमोल	—	अ + न् + अ + म् + ओ + ल् + अ
गोविन्द	—	ग् + ओ + व् + इ + न् + द् + अ
तराजू	—	त् + अ + र् + आ + ज् + ऊ
रहिमन	—	र् + अ + ह् + इ + म् + अ + न् + अ
अभिमान	—	अ + भ् + इ + म् + आ + न् + अ

(ग) रात	—	निशा, रात्रि	गुरु	—	आचार्य, शिक्षक
पथी	—	राही, राहगीर	प्रेम	—	प्यार, स्नेह
बाल	—	शिशु, बालक			

(घ) गोविंद — गुरु और **गोविंद** में गुरु बड़ा होता है।

वचन — मीठे **वचन** वशीकरण का मन्त्र हैं।

झूठ — **झूठ** के बराबर कोई पाप नहीं होता।

पंथी — खज़ूर के बड़े होने का क्या फायदा। इसकी छाया **पंथी** को नहीं, मिलती है।

आदर्श विद्यार्थी: अच्छा नागरिक 18

(क) मौखिक

1. लड़के ने केला खाकर छिलका सड़क पर फेंक दिया।
2. गलियों में गंदगी हम फैलाते हैं, इधर-उधर कूड़ा डालकर।
3. स्कूल को हमेशा साफ रखना हमारा कर्तव्य है।

(ख) लिखित

1. लड़के का पैर केले के छिलके पर पड़ा और वह फिसलकर गिर गया और उसे चोट लग गयी।
2. हमारी असावधानी के भयंकर परिणाम होते हैं। हमारी असावधानी से किसी को चोट लग सकती है। कई तरह की बीमारियाँ फैल सकती हैं इसलिए हमें साफ-सफाई रखनी चाहिए।
3. हमें मुहल्ले और गलियों की सफाई के लिए कूड़ा हमेशा कूड़ेदान में डालना चाहिए।
4. आदर्श विद्यार्थी के निम्न गुण हैं—
   - आदर्श विद्यार्थी आज्ञा का पालन करता है।
   - आदर्श विद्यार्थी साफ-सफाई पर ध्यान देता है।
   - वह सभी कार्य उचित समय पर करता है।
   - आदर्श विद्यार्थी अनुशासन प्रिय होता है।
   - आदर्श विद्यार्थी आचरण की शुद्धता पर ध्यान देता है।

(ग) 1. रक्त 2. कूड़ेदान 3. मूँगफली 4. धकेलकर 5. आदर्श विद्यार्थी

(घ)	रक्त	—	खून	—	लड़के के सिर से **रक्त** बहने लगा।
	कर्तव्य	—	फर्ज	—	कूड़े को कूड़ेदान में डालना हमारा **कर्तव्य** है।
	सख्त	—	कठोर	—	विदेशों में सफाई के लिए **सख्त** नियम हैं।
	आसान	—	सरल	—	अगर हम छोटी–छोटी बातों का ध्यान रखने लगे तो काम कितना **आसान** हो जाएगा।

भाषा-बोध

(क)	दिन	—	**रात**	गहरी	—	**उथली**
	सावधानी	—	**असावधानी**	सख्त	—	**कोमल**
	प्यार	—	**घृणा**	सुविधा	—	**असुविधा**
(ख)	रक्त	—	**खून, लहू**	बीमारी	—	**रोग, व्याधि**
	लड़का	—	**बालक, शिशु**	प्यार	—	**प्रेम, मोहब्बत**

(ग) दिन — **वार** — कल के **दिन** सफाई का प्रण करो सभी।

दीन — **गरीब** — वह **दीन** व्यक्ति है, उसकी सहायता करनी चाहिए।

रक्त — **खून** — लड़के के सिर से **रक्त** निकलने लगा।

रसद — **खाने का सामान**—नीरज बाजार से **रसद** ले आया।

(घ)	रचना	—	रचनाकार, रचनाकृत, रचनाकृति
	कर्तव्य	—	कर्तव्यनिष्ठ, कर्तव्यशील, कर्तव्यपालन
	डर	—	डरावना, निडर, डरपोक
	प्रसन्न	—	प्रसन्नता, प्रसन्नचित, प्रसन्नतापूर्वक

(ङ)	सावधान	+	ई	=	सावधानी
	विदेश	+	ई	=	विदेशी
	दौड़	+	ता	=	दौड़ता
	राष्ट्र	+	ईय	=	राष्ट्रीय
	सफल	+	ता	=	सफलता
	गुण	+	वान	=	गुणवान

अभिनंदन-5

हम स्वदेश के प्राण 1

(क) मौखिक

1. बच्चे देश की रक्षा करते हैं इसलिए अपने आपको, स्वदेश के प्राण बताते हैं।
2. बच्चों की आँखों में प्रतिपल नव-निर्माण का सपना रहता है।
3. बच्चे अपने देश की रक्षा करने के लिए, प्राण देने को तत्पर हैं।
4. जब तक हमारा देश सलामत है, तब तक हम शक्तिशाली बनकर रह सकते हैं।

(ख) लिखित

1. बच्चे अपने देश को सबल बनाने के बारे में कहते हैं कि जब तक देश सबल है, तब तक हम सबल हैं, इसके बल से ही हममे बल रहता है।
2. देश की रक्षा के लिए हमें अगर प्राण भी त्यागने पड़े तो, त्याग देने चाहिए क्योंकि देश की रक्षा करना, हमारा धर्म है।
3. 'और सबल इसको करना है', से आशय देश को और मजबूत तथा बलवान बनाने से है।
4. यह कविता हमारे दिल में देशभक्ति की भावना पैदा करती हैं क्योंकि हम स्वदेश के प्राण हैं।

(ग) हमें अपने देश में ही जीना मरना है। हर-दम इसी देश का दम भरना है कि हम यहाँ के रहने वाले हैं। अगर देश की रक्षा करते वक्त मृत्यु भी आ जाए तो, उससे भी लड़कर देश की रक्षा करनी है।

(घ)

1. आँखों में प्रतिपल रहता है,
हृदयों में अविचल रहता है,
यह है सबल, सबल हैं हम भी,
इसके बल से बल रहता है,
2. यहीं हमें जीना-मरना है,
हरदम इसका दम भरना है,
सम्मुख अगर काल भी आए
चार हाथ उसे करना है;
इसकी रक्षा धर्म हमारा,
यही हमारा त्राण।
हम स्वदेश के प्राण।

भाषा-बोध

(क)

स्वदेश	—	विदेश	सबल	—	निर्बल
जीना	—	मरना	निर्माण	—	विनाश
धर्म	—	अधर्म			

(ख)

अविचल — अ + व् + इ + च् + अ + ल् + अ

सम्मुख — स् + अ + म् + म् + उ + ख् + अ

हाथ — ह् + आ + थ् + अ

(ग)

बल	—	सबल	परिवार	—	सपरिवार
क्रिय	—	सक्रिय	गुण	—	सगुण
जग	—	सजग	पूत	—	सपूत

(घ)

आँख	नयन
दम	श्वास
हाथ	कर
स्वदेश	अपना देश
प्राण	जीवन
सबल	बलवान

स्वार्थी दानव 2

(क) मौखिक

1. दानव का बगीचा बहुत ही बड़ा और सुन्दर था।
2. पाठशाला से लौटते समय, सभी बच्चे दानव के बगीचे में खेलने जाते थे।
3. बगीचे में बच्चों को खेलते हुए देखकर, दानव ऊँची आवाज में चिल्लाया, तुम यहाँ क्यों खेल रहे हो?
4. बच्चों के बगीचे में आने के साथ ही मुस्कुराता हुआ, बसंत भी बगीचे में आ गया इसलिए दानव ने बनी दीवार को तोड़ा ताकि बच्चे बगीचे में प्रवेश करें और खेलें।

(ख) लिखित

1. एक दिन दानव अपने घर में लेटा हुआ था। अचानक उसे किसी पक्षी का मधुर गान सुनाई दिया, तब उसे पता चला कि बसंत आ गया है।
2. बसंत न आने से स्वार्थी दानव के बगीचे में सन्नाटा छाया हुआ था। उसके

सभी वृक्ष ठूँठ की भाँति खड़े थे। न तो उनमें नई कोंपलें फूटीं तथा न ही फूल खिले। नरम–नरम हरी घास का आरामदेय गलीचा भी सूखकर पीत रंग धारण कर चुका था। कोई पक्षी उस बगीचे में नहीं चहचहाता था।

3. बच्चों के दीवार में सुराख करके बगीचे में आने से, बगीचे में बसंत आया।
4. बगीचे का सूना कोना दानव द्वारा बच्चे को वृक्ष की डाल पर बैठाने से हरा–भरा हुआ।
5. दानव ने अपनी गलती सुधारने के लिए बगीचे की दीवार तोड़ दी और बच्चों को खेलने की अनुमति दे दी।

(ग)
1. उस दृश्य को देखकर उसके हृदय में करुणा का सागर उमड़ पड़ा।
2. दानव ने अपने आपको स्वार्थ समझा।
3. दानव ने मन ही मन निश्चय किया कि वह बगीचे की दीवार को गिरा देगा और बच्चों को बगीचे में खेलने देगा।
4. दानव — **दानव** मन ही मन सोचता रहा।
   करुणा — दानव के मन में **करुणा** का सागर उमड़ पड़ा।
   सागर — **सागर** में सभी नदियाँ गिरती हैं।
   बगीचा — दानव का **बगीचा** बड़ा और सुन्दर था।

(घ)
1. दानव ने बच्चों से
2. दानव ने अपने आप से
3. दानव ने बच्चों से

भाषा-बोध

(क)

दानव	—	राक्षस	(मानव)	प्रेत	भीम
मधुर	—	(कर्कश)	मीठा	अच्छा	कोमल
शीत	—	शीतल	(उष्ण)	ठंडी	सुहावनी
फूल	—	पुष्प	प्रसून	सुमन	(काँटा)

(ख)

बच्चा	—	बालक	लड़का
मित्र	—	दोस्त	साथी
बगीचा	—	उद्यान	फुलवारी
वृक्ष	—	पेड़	तरु

(ग)

स्वार्थ	—	स्वार्थी	गुलाब	—	गुलाबी
जंगल	—	जंगली	बंगाल	—	बंगाली

(घ)

पाठशाला	(✓)	चलना	(✗)
मित्र	(✗)	पक्षी	(✓)
बालक	(✓)	दानवता	(✓)
रोना	(✗)		
तुरन्त	(✗)		
हँसता	(✗)		

(ङ)

दानव — द् + आ + न् + अ + व् + अ

बगीचा — ब् + अ + ग् + ई + च् + आ

चिड़िया — च् + इ + ड़् + इ + य् + आ

गलीचा — ग् + अ + ल् + ई + च् + आ

बकरी दो गाँव खा गई 3

(क) **मौखिक**

1. आदमी आगरा की सड़कों पर चिल्ला रहा था कि हाय बकरी दो गाँव खा गई।
2. वह आदमी एक किसान था और बादशाह अकबर उससे गन्ने के खेत में मिले थे।
3. किसान से गन्ने का रस अकबर ने माँगा क्योंकि वह बहुत थक गये थे।
4. पहली बार एक गन्ने के रस से लोटा भर गया था।
5. बादशाह ने किसान की बात पर खुश होकर पीपल के पत्ते पर दो गाँव देने की बात लिखी थी।

(ख) **लिखित**

1. अकबर ने जिस पीपल के पत्ते पर दो गाँव देने के लिए लिखा था उस पत्ते को बकरी खा गयी थी। इसलिए लेखक ने दो गाँव खा जाने की बात की है।
2. किसान ने अकबर की नियत के बारे में कहा कि लगता है, अकबर बादशाह की नियत बिगड़ गई है।
3. बादशाह अकबर ने किसान की बात पर खुश होकर उसे दो गाँव इनाम में दिए।
4. जैसी नियत वैसी बरकत होती है। बादशाह अकबर की नियत बिगड़ जाने के कारण दूसरी बार में लोटा नहीं भरा।

5. अकबर ने किसान को दो गाँव देते हुए कहा कि ''इस बार इन गाँवों को बकरी से बचाना।''

(ग) 1. बादशाह अकबर ने किसान से—क्योंकि वह थक गये थे।

2. किसान ने अकबर से—क्योंकि लोटा रस से नहीं भरा था।

3. बादशाह अकबर ने किसान से—क्योंकि पीपल का पत्ता बकरी खा गयी थी।

4. अकबर ने किसान से क्योंकि लोटा पूरा भर गया था।

भाषा-बोध

(क)

बादशाह	फकीर
सरस	नीरस
सच	झूठ
आमदनी	व्यय
सुखी	दु:खी

(ख)

भिन्न — दो बालक एक दूसरे से **भिन्न** हैं।

विभिन्न — **विभिन्न** वस्तुएँ बाजार में मिल रहीं हैं।

शंका — मुझे **शंका** है कि पेन गौरी ने ही चुराया है।

आशंका — मुझे **आशंका** थी कि कहीं मेरा पेन चोरी न हो जाए।

(ग)

लोटा	—	लोटे	बकरी	—	बकरियाँ
पौधा	—	पौधे	गन्ना	—	गन्ने
पत्ता	—	पत्ते	भलाई	—	भलाइयाँ

(घ) 1. बादशाह गाँव में घूमने जाएँगे।

2. किसान गन्ना तोड़कर रस निकालेगा।

3. क्या किसान सच बोलेगा?

4. बादशाह अकबर किसान के नाम दो गाँव लिखेंगे।

(ङ) 1. बादशाह 2. स्वादिष्ट

3. नीयत 4. किसान

चतुर सुमेर 4

(क) मौखिक

1. सुमेर योग्य और चतुर व्यक्ति था।

2. सुमेर ने राजा से कहा कि यदि आप दरबार में पाँच मिनट एकांत में मुझसे प्रतिदिन बात कर लें, तो इसके बदले में मैं प्रतिदिन आपकी सेवा में पाँच सौ स्वर्ण मुद्राएँ अर्पित करूँगा।
3. मंत्री ने सुमेर को रोककर एक हजार स्वर्ण मुद्राएँ दीं और कहा—"देखिए, अब मेरी इज्जत आपके हाथ में है।"
4. सुमेर ने पाँच करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ एकत्र कर ली थीं।
5. राजा ने सुमेर को अपना महामंत्री नियुक्त किया क्योंकि वे उसकी ईमानदारी और स्वामीभक्ति से बहुत प्रसन्न थे।

(ख) लिखित

1. पाँच मिनट में पाँच स्वर्ण मुद्राओं का रहस्य जानने के लिए राजा ने सुमेर की बात मान ली।
2. सुमेर प्रतिदिन दरबार में राजा से पाँच मिनट बात करने आता था।
3. सुमेर ने राजा से वार्तालाप करते वक्त, मन्त्री की तरफ देखकर मुस्कुरा दिया था इसलिए मन्त्री घबरा गया था।
4. सुमेर ने राजा को सलाह दी कि—महाराज राजा को सबके सामने किसी भी व्यक्ति से अकेले में बात नहीं करनी चाहिए अन्यथा वह व्यक्ति राजा से अपनी निकटता का ढिंढोला पीटकर लाभ कमा सकता है।
5. सुमेर के दिन बदलने का कारण उसकी योग्यता और चतुराई थी।

(ग)

1. सुमेर ने मन्त्री से—क्योंकि वह उसके पीछे चल रहा था।
2. मंत्री ने सुमेर से—क्योंकि सुमेर ने मन्त्री से कहा था कि उसने उसका कार्य करवा दिया है।
3. सुमेर ने राजा से—क्योंकि उसने धन राजा के सान्निध्य में से प्राप्त किया था।

भाषा-बोध

(क)

उल्लू बनाना — बेवकूफ बनाना
फूले न समाना — बहुत खुश होना
ढिंढोरा पीटना — सबको बताना

(ख)

1. सुमेर, राजा
2. सुमेर, मन्त्री
3. सुमेर
4. राजा

(ग)

चतुर — मूर्ख
राजा — रंक
इज्जत — बेइज्जत
ईमानदारी — बेईमानी
अनिवार्य — वैकल्पिक

बहादुर बालक 5

(क) **मौखिक**

1. वंश सुझाव देता है कि अगले हफ्ते अमराई में पिकनिक मनाने चलें, वहाँ पास में एक बंगला भी है, वहाँ हम सब आराम से रह सकते हैं।
2. बाग के पास एक भूत बंगला है।
3. बच्चों ने बाग में छिपकर देखा कि कुछ लोग हाथ में सन्दूक लेकर बंगले की तरफ आ रहे हैं।
4. वंश ने टायर की हवा निकालने के लिए रहीम को कहा।
5. चोरों के हाथ में थैला, दूसरे हाथ में हथियार हैं। ओफ! एक के पास पिस्तौल है। ये अपने साथ हथियार लाए हैं।
6. इंस्पेक्टर ने वंश का उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि मैं सरकार से सिफारिश करूँगा कि तुम्हें बहादुरी का पुरस्कार दिया जाये। तुम सब बच्चों को भी पुरस्कार और प्रमाण मिलेंगे।

(ख) **लिखित**

1. प्रतीक और खुशी ने अमराई जाने से इनकार इसलिए किया क्योंकि उनको लगता था कि अमराई के पास वाले बंगले में भूत है।
2. बालकों ने बंगले का रहस्य जानने के लिए पास वाले बाग में छिपकर बंगले पर नजर रखी।
3. बच्चों ने पुलिस को खबर कर दी थी, चारों के वहाँ होने की और चुपचाप गाड़ी की हवा निकाल दी ताकि वह भाग न सकें। इस प्रकार पुलिस ने चोरों को पकड़ लिया।
4. वंश बहादुर लड़का था। वह साहसी, निडर, बहादुर, वीर और प्रतिभावान बालक था।

(ग) रहीम इंस्पेक्टर रहीम प्रतीक

(घ) **दृश्य–**बगीचे का **दृश्य** अत्यधिक सुहावना है।

निपटारा–कविता और रानी की लड़ाई का **निपटारा** कौन करेगा?

बहादुरी–इंस्पेक्टर ने कहा कि तुम बच्चों को **बहादुरी** का पुरस्कार दिया जाना चाहिए।

पुरस्कार–तुम बच्चों की भी **पुरस्कार** मिलेंगे।

सिफारिश–इंस्पेक्टर ने कहा कि तुम्हारे पुरस्कार के लिए मैं सरकार से **सिफारिश** करूँगा।

पुरस्कार–भारत रत्न पुरस्कार सर्वश्रेष्ठ **पुरस्कार** है।

भूत-प्रेत–**भूत-प्रेत** कुछ नहीं होता, वंश ने कहा।

भाषा-बोध

(क)	मैं	मेरा	हमारा				
	तुम	तुम्हें	तुम्हारा				
	वह	उसका	उनका				
	कौन	किसका	कौन सब				

(ख)	चतुराई	—	चतुर	सफेदी	—	सफेद
	गरीबी	—	गरीब	होशियारी	—	होशियार
	बहादुरी	—	बहादुर	दिन	—	दैनिक
(ग)	बाग	—	उद्यान, बगीचा	आदमी	—	मानव, मनुष्य
	अध्यापक	—	गुरु, आचार्य			
(घ)	पास	—	दूर	शांत	—	अशांत
	बहादुरी	—	कायरता	सच	—	झूठ
	जलना	—	बुझना	अंदर	—	बाहर

कर्म ही भाग्य 6

(क) मौखिक

1. तेनालीराम ने सड़क के किनारे एक युवक को ज्योतिषी से बातें करते देखा।
2. ज्योतिषी ने भविष्यवाणी करते हुए कहा कि—"बेटा, तुम्हारा भाग्य तुम्हारे पक्ष में है। तुम्हें अति शीघ्र बड़ी सफलता मिलने वाली है। तुम्हें राजा द्वारा सम्मानित किया जाएगा। तुम बड़े धनवान बनने वाले हो।"
3. तेनालीराम ने मन ही मन युवक को सही शिक्षा देने का निर्णय कर लिया था इसलिए उन्होंने युवक का पीछा किया।
4. युवक को बंदी बनाकर तेनालीराम के सामने पेश किया गया।
5. युवक ने तेनालीराम से प्रार्थना की कि, "श्रीमान मुझे मुक्त कर दो। मैं कोई चोर या ठग नहीं हूँ। मैं एक गरीब युवक हूँ। आखिर मैंने ऐसा क्या

अपराध किया है, जो सैनिकों ने मुझे बंदी बना लिया और आपके सामने पेश किया है।''

(ख) **लिखित**

1. ज्योतिषी ने युवक के मन का संशय दूर करते हुए कहा कि बेटा तुम चिंता मत करो, तुम्हारे नक्षत्र तुम्हारे पक्ष में हैं, वहीं तुम्हें यह सम्मान दिलाएँगे। भले ही तुम कोई विशेष कर्म करो या न करो। शाही सम्मान तुम्हें ही मिलेगा।''
2. तेनालीराम ने युवक के घर के बाहर खड़े होकर युवक और उसकी माँ की बातचीत सुनी।
3. युवक की माँ ने युवक को समझाया कि बेटा अगर तुम कोई काम करोगे ही नहीं, तो फिर रुपये आएँगे कहाँ से? रुपया-पैसा तो मेहनत करके कमाया जाता है।''
4. तेनालीराम ने भाग्य की बात करते हुए युवक को सीख दी कि मेहनत का दुनिया में कोई विकल्प नहीं है। तुम्हारा कर्म ही तुम्हारा भाग्य है। अत: भाग्य पर भरोसा करके निठल्ला मत बैठना।

(ग)
1. युवक ने ज्योतिषी से क्योंकि ज्योतिषी ने युवक को राजा द्वारा सम्मान मिलने की बात की थी।
2. युवक ने तेनालीराम से क्योंकि वह अपनी सजा माफ कराना चाहता था।
3. तेनालीराम ने युवक से सजा माफ करते हुए कहा।

(घ)
1. पिंजरा 2. नक्षत्र
3. अमीर 4. ग्रहों

भाषा-बोध

(क)

दिन	दिवस
तोता	सुग्गा
संशय	शक
दक्षिणा	दान
मूक	मौन

(ख)

अन्दर	—	न्द	बन्दर	मन्दिर
भाग्य	—	ग्य	आरोग्य	निरोग्य
प्राप्त	—	प्त	लिप्त	संक्षिप्त

मुक्त	—	क्त	आयुक्त	उपयुक्त
कृत्य	—	त्य	सत्य	असत्य

(ग)

दिन	—	रात	गरीब	—	अमीर
अंदर	—	बाहर	सजा	—	पुरस्कार
सौभाग्य	—	दुर्भाग्य			

(घ)

बड़ा	पिंजरा
दयालु	राजा
बूढ़ी	माँ
परिश्रमी	युवक
तीन	सैनिक

(ङ)
1. बेटा, तुम्हारा भाग्य तुम्हारे पक्ष में है।
2. **रानी** उद्यान में भ्रमण कर रही थी।
3. **अपराधिनी** को उचित सजा मिली।
4. बीमार **पिता** ने अपनी आलसी बेटी को सुझाव दिया।
5. **घोड़ी** बहुत तेज दौड़ी।

दोहे 7

(क) **मौखिक**
1. हवा पाने के लिए पंखे को डुलाना होता है।
2. संत दूसरों के हित के लिए जीते हैं।
3. आज का काम कल पर नहीं छोड़ना चाहिए। क्योंकि पल में प्रलय कभी भी हो सकती है और काम अधूरा ही रह जाता है।
4. सुई का काम सिलाई करने का है।
5. संत का परहित (परोपकार) का गुण महत्वपूर्ण है।
6. दु:ख दूर करने का रास्ता है कि भगवान का सुख में ही सुमरन किया जाए।

(ख) **लिखित**
1. विद्या और धन परिश्रम द्वारा पाया जा सकता है।
2. पेड़ अपने फल दूसरों को खाने के लिए देता है।
3. जो करना है, वह तुरन्त करना चाहिए क्योंकि अगले पल क्या होने वाला है, इसका कुछ पता नहीं है।

4. रहीमदास जी कहते हैं कि बड़ी चीज को देखकर छोटी वस्तु को फेंकना नहीं चाहिए क्योंकि जहाँ सुई का काम होता है, वहाँ तलवार का प्रयोग नहीं किया जा सकता।
5. सुख में हमें ईश्वर से कुछ नहीं चाहिए होता है इसलिए हम ईश्वर को याद नहीं करते हैं।
6. ज्यादा चुप नहीं रहना चाहिए, वरना लोग बेवकूफ समझ लेते हैं और ज्यादा परेशान करते हैं।

(ग) (i) तरुवर फल नहीं खात है, सरवर पिए न नीर।
परहित ही के कारण, संतन धरा शरीर।।

(ii) काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलै होएगी, बहुरि करोगे कब।।

(iii) जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ग्यान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।

भाषा-बोध

(क)
परहित — प् + अ + र् + अ + ह् + इ + त् + अ
रहिमन — र् + अ + ह् + इ + म् + अ + न् + अ
तलवार — त् + अ + ल् + अ + व् + आ + र् + अ
सुमिरन — स् + उ + म् + इ + र् + अ + न् + अ्
बरसना — ब् + अ + र् + अ + स् + अ + न् + आ

(ख)
तरुवर — पेड़, वृक्ष   सरवर — ताल, तडाग
तलवार — खड्ग, कृपाण   शरीर — तन, देह
पंखा — बीजना, बेना

(ग)
फल — सफल, विफल, प्रतिफल, सीताफल
हार — प्रहार, उपहार, संहार, कहार
मान — मेहमान, अपमान, उपमान, कृतिमान
रूप — रूपवान, प्रारूप, कुरूप, अनुरूप
हवा — हवामहल, हवाई, हवाला, हवापूर्ण, हवादार

(घ)
तरुवर — तरुवर   रहीमन — रहिमन
मौल — मोल   सूमिरन — सुमिरन

वर्तमान ही सबकुछ है 8

(क) मौखिक

1. राजा के महल के सामने शाही माली का घर था।
2. राजा माली से इसलिए प्रभावित हुआ क्योंकि वह हमेशा खुश रहता था।
3. माली परिश्रम करने का आदी था।
4. राजा माली की तरह खुश रहना चाहता था।
5. शाम को राजा ने माली को सारे दिन-भर के काम निपटाकर अपने उपकरणों को इकट्ठा करते देखा।

(ख) लिखित

1. माली परिश्रम और वर्तमान को ही सबकुछ समझने वाला व्यक्ति था।
2. राजा माली को देखकर अपने बारे में सोचता है कि काश मैं भी इसकी तरह प्रसन्न रह पाता।
3. राजा ने माली से प्रश्न पूछा कि तुम्हारी खुशी का रहस्य क्या है? क्योंकि राजा भी उसकी भाँति खुश रहना चाहता था।
4. माली राजा को अपनी प्रसन्नता का रहस्य बताता है कि मुझे दो वक्त का भोजन और रात को सोने के लिए घर मिल जाता है। ईश्वर ने मुझे इतनी शक्ति प्रदान की है कि मैं पसीना बहाकर अपनी आजीविका कमा सकूँ। मैं सुबह से शाम तक परिश्रम करता हूँ। इसी कारण मुझे भूख लगती है, जो रुखा सूखा मिलता है, उसी को खाकर चैन मिल जाता है। थके होने के कारण रात को गहरी नींद सोता हूँ और सुबह नई ताजगी से उठता हूँ। मेरे लिए वर्तमान ही सब कुछ है।
5. राजा माली को सलाह देता है कि तुम्हें भविष्य की चिंता करनी चाहिए। अगर बीमार हो गये तो क्या होगा।
6. राजा ने मन ही मन निश्चय किया कि मैं अपने स्वभाव को बदल लूँगा और वर्तमान का पूरा-पूरा फायदा उठाऊँगा।

(ग)

1. चुस्त और प्रसन्न
2. वर्तमान का लाभ उठाने की

(घ)

खिन्नता — दुखी — राजा ने कभी माली के चेहरे पर **खिन्नता** के भाव नहीं देखे।

स्तुति — अर्चना — हमें भगवान की **स्तुति** करनी चाहिए।

रहस्य — भेद — राजा माली की प्रसन्नता का **रहस्य** जानना चाहता था।

(ङ) 1. राजा ने माली से उसकी प्रसन्नता का भेद जानने के लिए।

2. माली ने राजा से वर्तमान का महत्व बताते हुए।

भाषा-बोध

(क) 1. माली गरीब, परिश्रमी, ईमानदार और दयालु आदमी था।

2. राजा ने पूछा—तुम्हारी खुशी का क्या रहस्य है?

3. अरे! आप कब आए?

(ख) पानी — जल, नीर जीवन — जिन्दगी, प्राण

पास — निकट, समीप

(ग) उदास — उदासी व्यक्ति — व्यक्तित्व

प्रसन्न — प्रसन्नता संतुष्ट — संतुष्टि

(घ) राजा — नृप, प्रजापालक उद्यान — बगीचा, फुलवारी

खुशी — प्रसन्नता, प्रमोद

(ङ) दयालु — निर्दयी — **दयालु** और **निर्दयी** दोनों तरह के लोग होते हैं।

जीवन — मृत्यु — **जीवन** और **मृत्यु** दोनों सत्य हैं

राजा — प्रजा — **राजा** और **रंक** एक-दूसरे से भिन्न है।

बीमार — स्वस्थ — अभी मैं **स्वस्थ** हूँ पर चिंता करने से **बीमार** पड़ जाऊँगा।

तीन पड़ोसी 9

(क) **मौखिक**

1. तीन पड़ोसी बंदर, गीदड़ और खरगोश थे।
2. झाड़ी में खरगोश रहता था।
3. बंदर गीदड़ का मजाक उड़ाता रहता था।
4. अपनी झोपड़ी के छप्पर में छेद, गीदड़ ने बन्दर से बात करने के लिए कर रखा था।
5. गीदड़ अपने आपको होशियार समझता था।

(ख) **लिखित**

1. बंदर, गीदड़ और खरगोश में जरा भी मेल जोल नहीं था।

2. गीदड़ बंदर से इसलिए जलता था क्योंकि वह उसका मजाक उड़ाता था।
3. गीदड़ ने बंदर की पूँछ में आग इसलिए लगा दी थी क्योंकि बंदर ने अपनी पूँछ गीदड़ के घर में लटका दी थी।
4. बंदर की पूँछ में आग लगाना गीदड़ की मूर्खता थी क्योंकि उससे उसी का घर और वह जल गए।
5. गीदड़ को अपनी करनी का फल मिला कि वह और उसका घर जल गया।
6. अंत में तीनों पड़ोसियों ने भाई–चारे से रहने का निर्णय लिया।

(ग)

पड़ोसी	—	खरगोश, गीदड़ और बंदर तीनों **पड़ोसी** थे।
बातचीत	—	गीदड़ बन्दर से **बातचीत** करता रहता था।
होशियार	—	गीदड़ अपने आपको बहुत **होशियार** समझता था।
सलाह	—	शेर, हाथी, चीता आदि सभी गीदड़ से **सलाह** लेते थे।
मेल–जोल	—	तीनों पड़ोसियों में जरा भी **मेल–जोल** नहीं था।
उद्देश्य	—	जीवन का **उद्देश्य** हमेशा नेक रखना चाहिए।
मजाक	—	बन्दर ने **मजाक** में अपनी पूँछ गीदड़ के घर में लटका दी।
निर्णय	—	तीनों पड़ोसियों ने मेल–जोल से रहने का **निर्णय** लिया।

भाषा-बोध

(क)

बातचीत	वार्तालाप
होशियार	समझदार
मूर्ख	बेवकूफ
सलाह	परामर्श
डाल	शाखा
आग	अग्नि
मजाक	हँसी

(ख)

बेवकूफी	—	बेवकूफ	अच्छाई	—	अच्छा
होशियारी	—	होशियार	दिन	—	दैनिक
मोटापा	—	मोटा	शांति	—	शान्त

(ग)

हिंसा	—	अहिंसा	पवित्र	—	अपवित्र
समझ	—	असमझ	चल	—	अचल
सफल	—	असफल	प्रसन्न	—	अप्रसन्न

(घ)

होशियार	—	बेवकूफ	सुख	—	दुख

	गरीब	—	अमीर	अच्छा	—	बुरा
	मूर्ख	—	समझदार	मोटा	—	पतला
(ङ)	समान	—	समानता	मूर्ख	—	मूर्खता
	होशियार	—	होशियारी	प्रसन्न	—	प्रसन्नता
	बाहर	—	बाहरी	बीमार	—	बीमारी

सुनहरी मछली 10

(क) मौखिक

1. वृद्ध दंपत्ति गरीबी का जीवन व्यतीत करते थे।
2. सुनहरी मछली ने वृद्ध से कहा कि मुझे पानी में छोड़ दो, इसके बदले मैं आपकी जो इच्छा हो, उसे पूरा कर दूँगी।
3. सौभाग्य ने तुम्हारे दरवाजे पर दस्तक दी और तुमने उसे वापस लौटा दिया का अर्थ है, अच्छे समय को खो देना।
4. बूढ़े ने सुनहरी मछली से पहली बार अपने और अपनी पत्नी के लिए भोजन माँगा।
5. बूढ़े को अस्तबल में ले जाकर चालीस कोड़े लगाए गए।

(ख) लिखित

1. बूढ़े को सुनहरी मछली सागर में मछली पकड़ते वक्त मिली।
2. भोजन और नए घर की व्यवस्था हो जाने के बाद बूढ़े की पत्नी ने एक ऐसी सुन्दर तथा धनाढ्य महिला बनने की इच्छा प्रकट की, जिसे सब झुककर सलाम करें।
3. बुढ़िया लालची और धूर्त थी क्योंकि उसकी इच्छाएँ समाप्त होने का नाम नहीं ले रही थी और सुन्दर होने के बाद, उसने अपने पति को ही पहचानने से इनकार कर दिया था।
4. बूढ़े की पत्नी ने बूढ़े से कहा कि तुम्हें इतना ज्ञान नहीं कि एक कुलीन महिला से किस तरह बात की जाती है और तुमने मुझ जैसी कुलीन महिला को अपनी पत्नी कहा। इस बात के लिए बूढ़े को कोड़े लगाए गये।
5. बुढ़िया के लालच का अंत तब हुआ जब उसने सब कुछ खो दिया। और अपनी पुरानी स्थिति में आ गयी।

(ग) 1. सुनहरी मछली ने वृद्ध से अपनी जान बक्शने के लिए।

2. वृद्ध की पत्नी ने वृद्ध से और इच्छाएँ पूरी करने के लिए।
3. सुनहरी मछली ने वृद्ध से उसकी इच्छा पूरी करते हुए।

(घ) सागर — वृद्ध दम्पत्ति **सागर** से मछली पकड़कर अपना गुजारा करते थे।
विचित्र — वह मछली **विचित्र** थी।
अदृश्य — 'जैसा चाहोगे वैसा हो जाएगा' इतना कहकर मछली **अदृश्य** हो गयी।
असंतुष्ट — खाना और घर पाकर भी वृद्ध की पत्नी **असंतुष्ट** थी।

भाषा-बोध

(क)	मछली	—	मीन, मत्स्य	वृद्ध	—	बूढ़ा, बुड्ढा
	सागर	—	समुद्र, जलधि	महिला	—	स्त्री, नारी
(ख)	द्वीप	—	द्वीपों	बूढ़ा	—	बूढ़े
	सागर	—	सागरों	बुढ़िया	—	बुढ़ियाँ
	मछली	—	मछलियाँ	इच्छा	—	इच्छाएँ
	पत्नी	—	पत्नियाँ	नौकर	—	नौकरों
(ग)	वृद्ध	—	जवान	मुश्किल	—	सरल
	दयालु	—	दुष्ट	सौभाग्य	—	दुर्भाग्य

(घ) (i) पुरानी (ii) मछली
(iii) भोजन (iv) कुलीन

(ङ)	गरीब	—	अमीर	मुश्किल	—	आसान
	आदमी	—	औरत	वृद्ध	—	जवान
	बड़ा	—	छोटा	नया	—	पुराना
	अपनी	—	परायी	सुंदर	—	कुरुप

शाम का गीत 11

(क) मौखिक

1. सूरज दूसरे दिन आने का वादा करके अपने घर जाता है।
2. कवि संध्या को बहन के रिश्ते से सम्बोधित करता है।
3. हवा नींद में डूबी हुई है।
4. रात को अम्बर में उजाला चन्द्रमा करता है।

(ख) **लिखित**

1. सूरज अपने घर किरणों की गठरी बाँधकर लौटा।
2. सूरज के जाने पर संध्या दरवाजे से झाँकने लगी।
3. सूरज के चले जाने के बाद सड़कों ने काला-काला एक लबादा ओढ़ लिया।
4. रात के आने पर सूरज का काम चन्द्रमा ने संभाला और तारों की भीड़ जमा करके अम्बर में उजाला कर दिया।

(ग) (i) धीरे-धीरे शाम होने लगती है। दिन हल्का पीला-पीला हो जाता है। आदमी थका-थका सा हो जाता है और हवा ऐसी हो जाती है जैसे नींद में भरी हुई हो।

(ii) रात होने पर घरों में रंग-बिरंगी लाइटें जल जाती हैं और शहर का रूप ज्यादा निखर जाता है या ज्यादा सुन्दर लगने लगता है।

(घ) गठरी — किरणों की **गठरी** बाँधकर सूरज अपने घर को जाता है।

लबादा — शाम होने पर लड़कें काला-काला एक **लबादा** ओड़ लेते हैं।

अंबर — चंदा **अम्बर** में उजाला करता है।

उजाला — चंदा तारों की भीड़ जमा करके अम्बर में **उजाला** करता है।

भाषा-बोध

(क) सूरज — सूर्य, रवि   संध्या — शाम, साँझ

चंदा — चन्द्रमा, शशि   अंबर — आकाश, गगन

उजाला — प्रकाश, रोशनी

(ख) आज — कल   संध्या — प्रात:

उजाला — अँधेरा   शहर — गाँव

(ग) वादा — लबादा   दीदी — उनींदी

संभाला — उजाला   गिन — दिन

घर — कर   माला — डाला

सत्यवादी हरिश्चन्द्र 12

(क) **मौखिक**

1. राजा हरिश्चन्द्र प्राचीन काल में एक सत्यवादी राजा थे।
2. देवराज इन्द्र ने राजा हरिश्चन्द्र की परीक्षा लेने का निर्णय लिया।

3. राजा हरिश्चन्द्र ने अपने मंत्री को आदेश दिया कि—'राजकोष से दक्षिणा के लिए धन मँगवाओ।''
4. राजा हरिश्चन्द्र की पत्नी का नाम तारामती और पुत्र का नाम रोहिताश्व था।
5. राजा हरिश्चन्द्र ने तारामती से कर के रूप में उनकी साड़ी का आधा हिस्सा माँगा।

(ख) लिखित

1. मुनि विश्वामित्र महाराजा हरिश्चन्द्र की, सत्यवादिता व दानशीलता की परीक्षा लेना चाहते थे।
2. मुनि विश्वामित्र ने महाराजा हरिश्चन्द्र से दान में सम्पूर्ण राज्य माँगा।
3. राजा ने दक्षिणा की व्यवस्था स्वयं को बेचकर की।
4. हरिश्चन्द्र ने तारामती को कर देने के नाम पर कहा कि—मैं स्वामी की भक्ति के विरुद्ध कुछ भी नहीं कर सकता। तुम्हें शमशान का कर देना ही पड़ेगा। उस कर से कोई मुक्त नहीं हो सकता।
5. तारामती ने जैसे ही साड़ी फाड़ना शुरू किया तो तुरन्त विश्वामित्र और अन्य देवता प्रकट हो गये। विश्वामित्र ने हरिश्चन्द्र से कहा—''तुम्हारी परीक्षा ली जा रही थी कि तुम किस हद तक सत्य और धर्म का पालन कर सकते हो।'' फिर उनके पुत्र रोहिताश्व को जीवन प्रदान किया और उनका राज-पाट लौटा दिया।

(ग) हरिश्चन्द्र
राज्य
दक्षिणा
कालू
सत्यवादिता और दानशीलता

(घ)

सत्यवादिता	—	राजा हरिश्चन्द्र अपनी **सत्यवादिता** और दानशीलता के लिए अमर हो गए।
ससम्मान	—	राजा हरिश्चन्द्र ने विश्वामित्र को **ससम्मान** आसन ग्रहण करने को कहा।
श्मशान घाट	—	राजा को **श्मशान** घाट के स्वामी कालू नामक डोम ने खरीद लिया।
विषैला	—	रोहिताश्व को एक **विषैले** सर्प ने डस लिया।

भाषा-बोध

(क)

जगत्	—	चबूतरा, संसार, सौर जगत
कर	—	हाथ, हाथी की सूँड़, ब्याज
संस्कार	—	कर्म, आदतें, व्यवस्थित
घटना	—	कम होना, घटित होना, काम आना

(ख)

स्वार्थी	—	परोपकारी	उपस्थिति	—	अनुपस्थिति
मृत्यु	—	जन्म	सत्यवादी	—	असत्यवादी
धैर्य	—	अधीर	राजा	—	रंक
सम्मान	—	अपमान	प्राचीन	—	नवीन
सुख	—	दुख	परिचित	—	अपरिचित

(ग)

पुत्र	—	पुल्लिग	शांति	—	स्त्रीलिंग
दरबार	—	पुल्लिग	साड़ी	—	स्त्रीलिंग
डोम	—	पुल्लिग	रानी	—	स्त्रीलिंग
मुनि	—	पुल्लिग	देवता	—	पुल्लिग
राजा	—	पुल्लिग	घड़ी	—	स्त्रीलिंग
पहाड़	—	पुल्लिग			

सच्चा न्याय 13

(क) मौखिक

1. सिकन्दर महान न्याय प्रिय राजा था।
2. लोगों के बीच आतंक डाकू ने फैला रखा था।
3. सिकन्दर महान ने डाकू से कहा—"तुम क्षमा के योग्य नहीं हो। तुम घोर पापी और दुराचारी हो। तुमने मेरी प्रजा का सुख-चैन लूटा है। असहाय लोगों का रक्त बहाया है। तुम्हें तुम्हारे पापों की कड़ी सजा दी जाएगी। अगर तुम अपनी सफाई में कुछ कहना चाहते हो, तो कह सकते हो।"
4. सैनिकों के साथ हुई झड़प से डाकू घायल हो गया था।
5. डाकू की बात सुनकर चारों ओर खामोशी छा गयी।

(ख) लिखित

1. सिकन्दर अपनी प्रजा के सुख-दुख का पूरा ध्यान रखता था इसलिए उसकी प्रजा उसे चाहती थी।

2. सैनिक डाकू को बंदी बनाकर सिकन्दर के सामने लाए।
3. डाकू ने सिकन्दर के बारे में कहा कि मैंने आपकी न्यायप्रियता के बारे में काफी सुना है। यह भी सुना है कि आपके हाथों किसी निर्दोष को सजा नहीं मिलती।
4. डाकू ने अपना बाकी का जीवन मानव-सेवा में बिताया।
5. क्षमा वीरों का गहना है। इस पाठ से हमें यही शिक्षा मिलती है।

(ग) 1. न्यायप्रियता
2. मानव-सेवा में

(घ) कुख्यात — सिकन्दर के राज्य में एक **कुख्यात** डाकू रहता है।
न्यायप्रिय — सिकन्दर एक **न्यायप्रिय** शासक था।
आश्वासन — सिकन्दर के **आश्वासन** के बाद डाकू ने कुछ कहा।
दरिया — धन और शासन के लिए, रक्त के **दरिया** बहाएँ हैं।

भाषा-बोध

(क) महान — महानता   वीर — वीरता
योग्य — योग्यता   भूखा — भूख

(ख) कुख्यात — विख्यात   डाकू — साधू
सजा — क्षमा   न्याय — अन्याय
राजा — रंक   ताकतवर — कमजोर
शांत — अशांत   दुराचारी — सदाचारी

(ग) जीवन — जिन्दगी, प्राण   धन — रुपया, द्रव्या
कर — हाथ, ब्याज   प्राण — साँस, जिन्दगी
रक्त — खून, प्रेम युक्त   गुण — योग्यता, उपयुक्त

(घ) उच्च   सर्वोच्च   उच्चतम
न्याय   अन्याय   न्यायालय
कुख्यात   विख्यात   प्रख्यात
हिम्मत   मरम्मत   सम्मत

(ङ) सम्राट — राजा, नरेश   सजा — दण्ड, डाँट
दरिया — झील, नदी   जमीन — भूमि, धरा
क्षमा — दया, माफी   न्याय — इन्साफ, फैसला

(च) कुख्यात   निर्दोष   आश्वासन   खामोशी

सही पथ का ज्ञान 14

(क) मौखिक

1. राजकुमार के चिड़चिड़े, अभद्र तथा अविवेकपूर्ण व्यवहार के कारण महल के कर्मचारी राजकुमार से घृणा करने लगे थे।
2. महात्मा के चेहरे पर खुशी और संतोष की अनूठी चमक थी।
3. राजा आश्रम में महात्मा से मिलने के लिए गए।
4. नन्हें पौधे की पत्ती का स्वाद कड़वा और पीड़ादायी था।
5. महात्मा राजकुमार को समझाना चाहता था कि अभद्र तथा निर्दयतापूर्ण व्यवहार, कभी किसी के दिल को नहीं जीत सकता।

(ख) लिखित

1. राजकुमार का स्वभाव चिड़चिड़ा, अभद्र तथा अविवेकपूर्ण था।
2. राजा ने महात्मा से विनती की कि—"हे महात्मा, मैं चाहता हूँ कि आप हमारे साथ राजमहल में निवास करें। यहाँ आपके लिए उचित आश्रम की व्यवस्था कर दी जाएगी।
3. महात्मा राजकुमार को लेकर महल के विशाल उद्यान में भ्रमण करने के लिए गया तथा राजकुमार से एक नन्हें पौधे की पत्ती को तोड़कर, उसे चबाने और उसका स्वाद बताने को कहा।
4. राजकुमार ने विषैले पौधे के बारे में कहा कि यदि इस पौधे को फलने-फूलने दिया तो यह अनेक लोगों के स्वास्थ्य के लिए खतरा उत्पन्न कर सकता है।
5. राजकुमार ने मन ही मन अपने स्वभाव की सभी बुराइयों को त्यागकर जीवन के सही पथ पर चलने का संकल्प किया। क्योंकि वह जान गया था कि अभद्र और निर्दयतापूर्ण व्यवहार, कभी किसी के दिल को नहीं जीत सकता।

(ग)

1. राजा ने महात्मा से क्योंकि वह राजकुमार के व्यवहार को सुधारना चाहते थे।
2. राजकुमार ने महात्मा से क्योंकि उस पत्ती का स्वाद बहुत विषैला और पीड़ादायी था।
3. महात्मा ने राजकुमार से क्योंकि राजकुमार का व्यवहार अभद्र और निर्दयतापूर्ण था।

(घ) अभद्र — राजकुमार के चिड़चिड़े, **अभद्र** तथा अविवेकपूर्ण व्यवहार के कारण महल के कर्मचारी परेशान थे।

परिपूर्ण — राजा ने मन ही मन सोचा कि वास्तव में यह महात्मा दिव्य ज्ञान से **परिपूर्ण** है।

अयोग्य — राज्य की जनता **राजकुमार** को एक **अयोग्य** शासक समझती थी।

विषैला — राजकुमार ने कहा कि यह नन्हा पौधा अवश्य ही कोई **विषैला** पौधा है।

भाषा-बोध

(क)

पुरानी	—	नयी	असभ्य	—	सभ्य
अनूठी	—	सामान्य	महात्मा	—	दुरात्मा
राजा	—	रंक	योग्य	—	अयोग्य
निर्दयी	—	दयालु	उदार	—	कठोर

(ख)

राजा	—	प्रजापालक, भूप	अनूठी	—	अद्भुद, असामान्य
उद्यान	—	बगीचा, बाग	महात्मा	—	ऋषि, योगी।

(ग)

पुरानी बात	दयालु राजा
निर्दयी राजकुमार	भव्य महल
विषैला पौधा	अच्छा पुत्र

(घ) गुण — योग्यता, उपयुक्त

जीवन — जिन्दगी, प्राण

कर — हाथ, ब्याज

भाव — कीमत, ध्यान न देना

साँप और ब्राह्मण 15

(क) **मौखिक**

1. हरिदत्त एक ब्राह्मण था।
2. हरिदत्त आराम करने के लिए खेत के किनारे पर खड़े एक वृक्ष के नीचे गया।
3. हरिदत्त ने साँप को 'भू देवता' कहकर पुकारा।
4. साँप दूध के बदले में हरिदत्त को एक सोने का सिक्का भेंट करता था।

5. हरिदत्त के बेटे ने लालच में अंधा होकर साँप पर वार किया इसलिए साँप ने उसे डसा।

(ख) लिखित

1. हरिदत्त जब आराम करने के लिए वृक्ष के नीचे गया, तो उसकी मुलाकात साँप से हुई।
2. जब हरिदत्त हरिदत्त को पहली बार देखता है तो उससे कहता है कि—''हे भू देवता! मुझे आज से पहले यह नहीं पता था कि आप यहाँ इस बिल में निवास करते हैं। इसी कारण आपकी सेवा में चूक हुईं परन्तु भविष्य में ऐसा नहीं होगा। मुझे क्षमा कीजिए और मेरी ओर से यह भेंट स्वीकार कीजिए।''
3. हरिदत्त दूसरे गाँव में जाने से पहले अपने बेटे को समझता है कि—'बेटा, जब तक मैं घर न लोटकर आऊँ, तुम प्रतिदिन साँप के बिल के पास दूध से भरा कटोरा रखकर आते रहना। अपने इस काम में भूल कर भी चूक न करना।''
4. हरिदत्त का बेटा जब वहाँ दूध रखने गया तो उसे एक सोने का सिक्का मिला और उसके मन में लालच आ गया।
5. मित्रता का आधार विश्वास जब एक बार टूटता है तो फिर कभी नहीं बन पाता। मित्रता सदा के लिए समाप्त हो जाती है।

(ग)

1. हरिदत्त ने साँप से क्योंकि उसे पता नहीं था कि साँप वृक्ष के नीचे रहता है।
2. हरिदत्त ने अपने पुत्र से क्योंकि साँप से उसे रोज एक सोने का सिक्का मिलता था।
3. साँप ने हरिदत्त से क्योंकि हरिदत्त के पुत्र ने साँप पर लाठी से वार किया था।

(घ)

अनुग्रहपूर्वक — हरिदत्त को देखते ही साँप ने अपना फन उठा लिया तथा **अनुग्रहपूर्वक** इधर-से-उधर हिलाने लगा।

अपेक्षित — किसान ने सोचा कि शायद मैंने पहले कभी इसे नहीं देखा इसलिए मुझे भूमि से **अपेक्षित** धन नहीं मिल पाया।

कलंकित — सर्प ने कहा, हमारी मित्रता **कलंकित** हो चुकी है।

विष — हरिदत्त का बेटा साँप के **विष** से मर गया।

भाषा-बोध

(क) वृक्ष — पेड़, तरु, पादप

साँप — नाग, भुजंग, सर्प

बेटा — सुत, आत्मज, पुत्र

दूध — गोरस, दुग्ध, क्षीर

(ख) जमीन — आकाश

अपेक्षित — उपेक्षित

भूत — भविष्य

क्षमा — दण्ड

जीवन — मृत्यु

मित्रता — शत्रुता

विश्वास — अविश्वास

बेवकूफ — होशियार

(ग)
1. किसान ने खेत खोदा।
2. साँप ने दूध पिया।
3. हरिदत्त ने साँप को दूध पिलाया।
4. बच्चे ने सिक्का जेब में डाला।
5. लालची लोगों ने चोरी की।

(घ)
1. नृप, मृत, कृपा
2. सर्प, मर्म, कर्म
3. भ्रम, क्रमांक, ब्राह्मण

(ङ) लालच — ल् + आ + ल + अ + च् + अ

साँप — स् + आँ + प् + अ

समाचार — स् + अ + म् + आ + च् + आ + र् + अ

विश्वास — व् + इ + श् + व् + आ + स् + अ

(च)

शब्द	**विशेषण**	**शब्द**	**विशेषण**
गरीब ब्राह्मण	गरीब	जहरीला साँप	जहरीला
लालची व्यक्ति	लालची	सफेद हंस	सफेद
मीठी वाणी	मीठी	छोटा खेत	छोटा

(छ) जीवन — जिन्दगी, प्राण

कर — हाथ, ब्याज

गुण — योग्यता, उपयुक्त

प्रकृति का संदेश

16

(क) **मौखिक**

1. पर्वत ऊँचा होता है।
2. कवि मन की गहराई की तुलना सागर से करता है।
3. धैर्य न छोड़ने की सीख पृथ्वी देती है।

(ख) **लिखित**

1. पर्वत हमें ऊँचे बनने की शिक्षा देता है।
2. नभ हमसे सारा संसार ढकने को कहता है।
3. लहरों से हमें मन में मीठी-मीठी मृदुल उमंग भरना सीखना चाहिए।
4. जल की तरंगें उठ-उठ कर और गिर-गिर कर चलती हैं।
5. इस कविता में पर्वत ऊँचे उठने, सागर मन में गहराई लाने, पृथ्वी धैर्य न छोड़ने, नभ सारा संसार ढकने और लहरे मीठी-मीठी मृदुल उमंग मन में भरने की शिक्षा देते हैं।

(ग) पर्वत कहता है कि शीश उठाकर, तुम भी ऊपर उठ जाओ, यानि कि खूब पढो, लिखो और अच्छे काम करो ताकि सभी को तुम पर गर्व हो। और सागर मन में गहराई लाने की बात कहता है। ताकि अच्छे-बुरे की पहचान हो।

भाषा-बोध

(क) पर्वत — ऊँचाई   पृथ्वी — धैर्य
सागर — गहराई   आकाश — फैलाव

(ख) पर्वत — गिरि, पहाड़, धराधर
सागर — समुद्र, पारावार, जलधि
आकाश — नभ, गगन, अम्बर
संसार — लोक, जग, जगत

(ग) भद्र   स्वर्ग
मूर्ख   हर्ष

(घ) पर्वत — ऊँचा पर्वत
सागर — विशाल सागर
धैर्य — असीम धैर्य
संसार — बड़ा या भव्य संसार

(ङ)	पर्वत	—	पुल्लिग	शीश	—	पुल्लिग
	सागर	—	पुल्लिग	पृथ्वी	—	स्त्रीलिंग
	तरंग	—	स्त्रीलिंग	नभ	—	पुल्लिग

विद्‌वान मूर्ख 17

(क) मौखिक

1. विद्‌वान ब्राह्मण एक छोटे से नगर में रहते थे।
2. चारों मित्र भाग्य को सौभाग्य में बदलने (धन कमाने के लिए) दूसरे देश जाना चाहते थे।
3. मृत सिंह की अस्थियों को व्यवस्थित करके अस्थि-पिंजर पहले मित्र ने बनाया।
4. चौथा मित्र जंगली शेर से बचने के लिए पेड़ पर चढ़कर बैठ गया।

(ख) लिखित

1. चौथे मित्र को अन्य तीनों मित्रों की अपेक्षा व्यवहारिक ज्ञान ज्यादा था।
2. मृत शेर को मांस, रक्त तथा मांसपेशियाँ दूसरे मित्र ने प्रदान की।
3. चौथा मित्र मृत शेर में प्राण फूँकने के पक्ष में नहीं था क्योंकि वह एक जंगली सिंह था और जीवित होकर सबसे पहले उन पर ही झपटता।
4. पहले तीन मित्र विद्‌वान होते हुए भी मूर्ख थे क्योंकि शेर को जीवित करके उन्होंने अपने प्राण गंवा दिए।

(ग) 1. देश 2. यात्रा
3. प्राण 4. पेड़

(घ)
1. पहले मित्र ने अपने सभी मित्रों से—क्योंकि छोटे नगर में उनके ज्ञान की कोई कीमत नहीं थी।
2. चौथे मित्र ने तीसरे मित्र से—क्योंकि प्राण आते ही, वह सबसे पहले उन्हीं पर वार करेगा।
3. पहले मित्र ने चौथे मित्र से—क्योंकि वह शेर में प्राण डालने के लिए मना कर रहा था।

भाषा-बोध

(क) • देश — विदेश
लोग अधिकतर उच्च शिक्षा के लिए **देश-विदेश** जाते हैं।

- मित्र — शत्रु
  आपस में **शत्रुता** नहीं **मित्रता** करनी चाहिए।
- मृत — जीवित
  मृत शेर **जीवित** होकर सबसे पहले तुम्हीं पर वार करेगा।
- उचित — अनुचित
  अनुचित बात अच्छे **उचित** व्यक्तियों को शोभा नहीं देती।

(ख)

यात्रा	—	यात्राएँ	सिद्धि	—	सिद्धियाँ
बात	—	बातें	अस्थि	—	अस्थियाँ
मित्र	—	मित्रों	रास्ता	—	रास्ते

(ग) 1. दहाड़ता 2. मिमियाती 3. रंभाती
4. चहचहाती 5. कूकती

(घ) 1. कपि 2. डर 3. अरण्य

(ङ) 1. और 2. लेकिन
3. वरना 4. कि

अनजाने द्वीप पर 18

(क) मौखिक

1. रॉबिन्सन क्रूसो के पिता एक व्यापारी थे।
2. रॉबिन्सन क्रूसो नाविक बनना चाहता था।
3. जहाज के कप्तान ने आदेश दिया कि—"यह चट्टान जहाज के टुकड़े कर देगी इसलिए तुरन्त एक नौका उतारो ताकि जहाज के साथ कोई डूबे नहीं।
4. एक भयंकर लहर ने नौका को उलट दिया और सभी यात्री समुद्र में डूबने लगे। क्रूसो भी बेहोश हो गया। जब उसे होश आया तो उसने स्वंय को निर्जन द्वीप पर अकेला पाया।
5. रॉबिन्सन क्रूसो रविवार की पहचान के लिए बड़ा चिह्न बनाता था।

(ख) लिखित

1. रॉबिन्सन क्रूसो के पिता रॉबिन्सन को, समुद्री यात्रा पर नहीं भेजना चाहते थे।
2. समुद्र-यात्रा में बहुत आनन्द आता है। नए-नए देश, नए-नए लोग और

अनोखी चीजें देखने को मिलती हैं। यह सुनते ही क्रूसो की समुद्री यात्रा करने की इच्छा में वृद्धि हुई।

3. समुद्र में तूफान आने से जहाज एक विशाल चट्टान से टकरा गया, नौका भी पलट गयी और रॉबिन्सन क्रूसो एक निर्जन द्वीप पर पहुँच गया।
4. रॉबिन्सन क्रूसो ने द्वीप पर रहने के लिए जहाज के पाल का तंबू तान लिया और खाने–पीने का सामान तथा आवश्यक वस्तुएँ टूटे जहाज से ले ली।
5. रॉबिन्सन ने वनवासियों को मारकर फ्राइडे के प्राण बचाए।

(ग)
1. आज से साढ़े तीन सौ वर्ष पूर्व, इंग्लैंड के उत्तरी भाग में स्थित 'याक' नामक नगर में एक बालक का जन्म हुआ, जिसे लोग राबिन्सन क्रूसो के नाम से जानते हैं।
2. उसने अपने पिता से समुद्र यात्रा करने की अनुमति माँगी।
3. जहाज के कप्तान ने आदेश दिया, "यह चट्टान जहाज के टुकड़े कर देगी। इसलिए तुरन्त एक नौका उतारो ताकि जहाज के साथ कोई डूबे नहीं।"
4. एक वृक्ष के नीचे क्रूसो ने जहाज के पाल का तंबू तान लिया और उसी में रहने लगा।

भाषा-बोध

(क)

जन्म	—	मृत्यु	दिन	—	रात
लंबी	—	छोटी	इच्छा	—	अनिच्छा
मित्र	—	शत्रु	विशाल	—	लघु

(ख)

ताल → सुर की ताल — तुम्हारे गाने की लय तथा ताल अति सुन्दर है।

ताल → तालाब — तालाब से मछलियाँ पकड़ लाओ।